सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 195, नई दिल्ली, सोमवार 22 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आप सभी को शारदीय नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

03 'सेवा पखवाड़ा' हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि पीएम मोदी चाहते हैं कि उनका जन्मदिन...
06 जैविक आयु बनाम कालानुक्रमिक आयु
08 आत्मनिर्भर भारत : भारत को विश्वगुरु बनाना हमारे हाथ में है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

निष्पक्ष सुनवाई और निर्दोष मानने का सिद्धांत संविधान

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

1. भारत में कानून क्या कहता है ?

•संविधानिक गारंटी:

अनुच्छेद 21 – जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार, जिसमें निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार निहित है।

अनुच्छेद 14 – सभी के लिए कानून के समक्ष समानता।

•निर्दोष मानने का सिद्धांत:

आपराधिक न्यायशास्त्र का मूल – "जब तक अभियोजन पक्ष दोष साबित न कर दे, आरोपी निर्दोष माना जाएगा।"

सबूत का भार अभियोजन पर होता है।

•कानूनी सुरक्षा:

अनुच्छेद 20(3) – आत्मदोष स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

अनुच्छेद 39A – गरीब और कमजोर वर्गों को निःशुल्क विधिक सहायता।

आरोपी को आरोपों की जानकारी, गवाह बुलाने, जिरह करने और कारणयुक्त निर्णय पाने का अधिकार।

• न्यायालय का दृष्टिकोण: सुप्रीम कोर्ट ने कई बार कहा है कि "निष्पक्ष सुनवाई ही आपराधिक न्याय का हृदय है।"

2. भारत में वास्तविकता (Law vs. Reality)

• न्याय में विलंब: 5 करोड़ से ज़्यादा मामले लंबित, वर्षों तक मुकदमे अटके रहते हैं।

• मीडिया ट्रायल: टीवी डिबेट और सोशल मीडिया आरोपी को दोषी बताने लगते हैं (जैसे – सुशांत सिंह राजपूत केस, दिल्ली दंगे केस)।

• पुलिस का दबाव व हिरासत में हिंसा: दबाव डालकर इकबालिया बयान कराए जाते हैं।

• असमान पहुँच: गरीब व हाशिए पर रहने वाले लोग अच्छे वकील नहीं कर पाते।

• जमानत की समस्या: हज़ारों अंडरट्रायल कैदी सालों जेल में रहते हैं, जबकि उनका दोष अभी साबित नहीं हुआ होता।

3. पड़ोसी देशों की स्थिति

• पाकिस्तान: संविधान का अनुच्छेद 10A निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार देता है, पर सैन्य अदालतें, राजनीतिक दबाव और लंबी हिरासत हकीकत हैं।

• बांग्लादेश: कानून निर्दोष मानने की गारंटी देता है, पर राजनीतिक मामलों में पक्षपात, यातना और विलंब आम है।

• नेपाल: संवैधानिक सुरक्षा तो है, पर भ्रष्टाचार और कमजोर व्यवस्था के कारण निष्पक्षता प्रभावित।

• श्रीलंका: न्यायपालिका स्वतंत्र है पर आतंकवाद निरोधक कानून (PTA) के तहत बिना मुकदमे के लंबी हिरासत होती है।

• म्यांमार: सेना-प्रभावित अदालतें, राजनीतिक कैदियों के लिए निष्पक्ष सुनवाई लगभग नामुमकिन।

4. मुख्य विवाद – कानून बनाम वास्तविकता

• कानून में: भारत और उसके पड़ोसी सभी देशों ने निष्पक्ष सुनवाई और निर्दोष मानने का सिद्धांत अपनाया है।

• हकीकत में: राजनीतिक दबाव, भ्रष्टाचार, मीडिया का प्रभाव, पुलिस की ज्यादती और अदालतों की धीमी रफ्तार इन अधिकारों को कमजोर बना देते हैं।

• सामान्य समस्या: "न्याय में देरी, न्याय से वंचित करना है।"

संक्षेप में:

भारत में निष्पक्ष सुनवाई और निर्दोष मानने का सिद्धांत संविधान द्वारा सुरक्षित है, परंतु मुकदमों की देरी, मीडिया ट्रायल, और असमान न्यायिक पहुँच इन अधिकारों को अक्सर कमजोर बना देती है। पड़ोसी देशों में स्थिति और भी गंभीर है, जहाँ राजनीतिक प्रभाव और कमजोर संस्थाएं न्याय को पूरी तरह प्रभावित करती हैं।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com

दिल्ली के डीटीसी यातायात में बसों का अकाल और खराब बसों से जनता असुरक्षित, सरकार अनजान

सुनील मिश्रा

नई दिल्ली: दिल्ली के दिल्ली ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन की बसों का अकाल पड़ना शुरू हो गया है दिल्ली के रूटों पर अब ड्राइवर बस स्टैंड पर बस नहीं रोकते ज्यादातर छोटी बसों की शिकायत ज्यादा रहती है डीटीसी का कोई शिकायत केंद्र काम नहीं करता दिल्ली के रोज सुबह ऑफिस जाने वाले डीटीसी के यात्रियों को एक एक बस के लिए 1 घण्टे से डेढ़ घंटे बस स्टैंड पर समय खराब होता है और शाम को आने वाले लोगों को भी 1 से दो घण्टे खराब करने पड़ते हैं फिर इतनी भीषण गर्मी में डेढ़ घंटे में बस भी आती है तो किसी का AC खराब लेकिन टिकट AC का ही लेना पड़ेगा किसी बस का दरवाजा खराब रास्ते में रोक देते हैं आजकल जनता को इतनी परेशानी उठानी पड़ रही है उसका कारण कई बसों को खराब होने के बाबजूद डिपो में बिना निरीक्षण के ही निकाल देते हैं न कोई इंस्पेक्शन होता है न कोई डिपो मैनेजर बसों की हालत पर ध्यान देता है ड्राइवर कंडक्टर भी ड्यूटी के लिए खराब गाड़ी सड़क पर उतार लेते हैं। कहा जाए कि डीटीसी भी अब असुरक्षित होती जा रही है

सरकार की तरफ से डीटीसी को काफी सुरक्षित बनाने की जरूरत है सरकार को उच्च अधिकारियों से लेकर ड्राइवर कंडक्टर तक और यातायात को सुरक्षित बनाने के लिए वाहनों के देखरेख की विशेष आवश्यकता है।

दिल्ली आउटर रिंग रोड पर फ्लाईओवर का इंतजार, अधर में योजनाएं....

आउटर रिंग रोड पर सावित्री सिनेमा फ्लाईओवर से मोदी मिल तक जाम की समस्या बनी हुई है। पिछले 15 सालों से फ्लाईओवर बनाने की योजनाएँ अटकी हुई हैं जिससे वाहन चालक परेशान हैं। पिछली सरकारों के प्रयास अधूरे रहे लेकिन अब भाजपा सरकार ने इस परियोजना पर काम करने का फैसला किया है जिसमें फ्लाईओवर का दोहरीकरण और विस्तार शामिल है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आउटर रिंग रोड पर सावित्री सिनेमा फ्लाईओवर से मोदी मिल तक लगने वाला जाम वाहन चालकों को परेशान कर रहा है। पिछले 15 सालों से यहाँ फ्लाईओवर बनाने की बात चल रही है और इस दौरान दो राजनीतिक दलों की सरकारें बदल चुकी हैं, लेकिन इस परियोजना पर काम अभी तक शुरू नहीं हो पाया है।

इस दौरान दो बार टेंडर जारी किए गए, लेकिन बाद में उन्हें रद्द कर दिया गया। नतीजतन, चिराग दिल्ली से मोदी मिल जाते समय सुबह और शाम के समय अक्सर जाम लग जाता है। वर्तमान में, इस मार्ग पर सावित्री सिनेमा और कालकाजी के सामने मोदी मिल को चिराग दिल्ली से जोड़ने वाले सिंगल फ्लाईओवर हैं।

कालकाजी में भैरों मंदिर के पास पेट्रोल और सीएनजी पंपों पर गाड़ियों की कतार भी सड़क तक फैली रहती है, जिससे अफरा-तफरी मच जाती है।

दक्षिणी दिल्ली के सबसे व्यस्त मार्गों में से एक, सावित्री सिनेमा से मोदी मिल फ्लाईओवर तक, स्थिति यह है कि शाम के समय वाहन चालक ट्रैफिक जाम के कारण नाराज़ हो जाते हैं और पूछते रहते हैं कि यहां फ्लाईओवर कब बनेगा। दरअसल, पिछले 15 सालों से इस इलाके को ट्रैफिक जाम से मुक्त करने के लिए सिर्फ योजनाएं ही बनती रही हैं, लेकिन किसी पर अमल नहीं हुआ।

सावित्री सिनेमा के सामने फ्लाईओवर बनाने का विचार सबसे पहले 2011-12 में शीला दीक्षित की सरकार के दौरान आया था। कहा गया था कि फ्लाईओवर बनने से यहाँ ट्रैफिक कम होगा। उनके निर्देश पर इस मामले में एक अध्ययन भी कराया गया था, लेकिन इसी दौरान उनकी सरकार चली गई और यह योजना अधर में लटक गई।

बाद में, 2015 में जब आम आदमी पार्टी की सरकार सत्ता में आई, तो लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने नई सरकार के सामने यह योजना पेश की। सरकार इस योजना पर काम करने को तैयार हो गई। योजना को दिल्ली शहरी कला आयोग (DUAC) के पास मंजूरी के लिए भेजा गया। DUAC ने यह कहते हुए मंजूरी देने से इनकार कर दिया कि प्रस्तावित फ्लाईओवर के कारण स्लिप रोड के लिए पर्याप्त जगह नहीं बचेगी।

लोक निर्माण विभाग ने इसके डिज़ाइन में संशोधन किया और योजना को वापस DUAC को भेजने की तैयारी की। उन्होंने सरकार से धन की माँग की। हालाँकि, सरकार ने धन की कमी का हवाला देते हुए इस योजना को प्राथमिकता सूची से हटा दिया, जिससे परियोजना अधर में लटक गई।

अब, भाजपा सरकार ने इस इलाके को ट्रैफिक जाम से मुक्त करने की योजना पर काम करने का फैसला किया है। गौरतलब है कि पिछली सरकारों ने केवल सावित्री सिनेमा के सामने ही फ्लाईओवर बनाने की योजना बनाई थी।

दिनांक 21/09/2025 को टेम्पल आफ लिबरलाइजेशन एन्ड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट के सौजन्य से... TOLWA TRUST VOLUNTEER GROUP की और से भंडारे का आयोजन किया गया, जिस में करीब 1000 हज़ार व्यक्तियों ने प्रषाद ग्रहण किया, भंडारे में मुख्य अतिथि :आदरणीय श्री संजय बाटला जी, एवमं श्रीमती पिंकी कुंडू जी महा सचिव (Tolwa) श्री अभिषेक राजपूत जी, Parivahan Vishesh (डेली न्यूज़ पत्रिका) तथा काफी समाज सेवी गणमान्य अतिथि मौजूद रहे।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
• दशहरे के दूसरे दिन
• दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
• स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
• पुराने कपड़े
• पुराने कंबल
• पुराने जूते-चप्पल
• बच्चों के लिए बैग
• किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है
स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

शारदीय नवरात्र विशेष

22 सितंबर 2025, सोमवार से शारदीय नवरात्र शुरू होंगे। इस बार नवरात्र तिथि में एक तिथि बढ़ रही है। इस साल श्राद्ध पक्ष में एक तिथि का क्षय हुआ है और नवरात्र में एक तिथि में वृद्धि हो रही है, इसलिए इस साल 9 दिन के नहीं 10 दिन के नवरात्र होंगे। इस बार शारदीय नवरात्र में चतुर्थी तिथि की वृद्धि हो रही है। नवरात्र में तिथि की वृद्धि शुभ फल दायक मानी जाती है। साथ ही माता का आगमन भी बहुत शुभ कारक हो रहा है। इस कारण से नवरात्र का प्रभाव भी शुभ ही प्राप्त होगा। कलश स्थापना 22 सितंबर, 2025 सोमवार को किया जाएगा, जिसका शुभ मुहूर्त इस प्रकार से है-:

प्रातःकाल का शुभ मुहूर्त-:

* प्रातः 06:19 से सुबह 07:40 तक/

शुभ का चौघड़िया-:

* सुबह 09:15 से सुबह10:40 तक/

अभिजीत मुहूर्त-:

* दोपहर 11:56 से 12:43 तक/

माता के नौ रूपों की पूजा-:

1.पहला दिन (22 सितंबर)-:

* मां शैलपुत्री - पर्वतराज हिमालय की पुत्री, स्थिरता और सुख की देवी।

2.दूसरा दिन (23 सितंबर)-:

* मां ब्रह्मचारिणी- तपस्या और संयम की प्रतीक, ज्ञान और विद्या की देवी।

3.तीसरा दिन (24 सितंबर)-:

* मां चंद्रघंटा - शांति और साहस की देवी, मस्तक पर अर्धचंद्र धारण करती हैं।

3.तीसरा दिन (25 सितंबर)-:

* मां चंद्रघंटा - शांति और साहस की देवी, मस्तक पर अर्धचंद्र धारण करती हैं।

4.चौथा दिन (26 सितंबर)-:

* मां कूष्मांडा - सृष्टि की जननी, ब्रह्मांड की उत्पत्ति से जुड़ी देवी।

5.पांचवां दिन (27 सितंबर)-:

* मां स्कंदमाता - भगवान कार्तिकेय की माता, संतति और सुख की देवी।

6.छठा दिन (28 सितंबर)-:

* मां कात्यायनी - ऋषि कात्यायन की पुत्री, विवाह और साहस की देवी।

7.सातवां दिन (29 सितंबर)-:

* मां कालरात्रि- उग्र स्वरूप वाली, शत्रुओं का नाश करने वाली देवी।

8.आठवां दिन (30 सितंबर)-:

* मां महागौरी- गौर वर्ण वाली, पापों का नाश करने वाली देवी।

9.नौवां दिन (1 अक्टूबर)-:

* मां सिद्धिदात्री- सभी सिद्धियों की दात्री, मोक्ष और शक्ति प्रदान करने वाली देवी।

(02 अक्टूबर ,विजयदशमी)

नवरात्रि के दौरान इन देवीयों की पूजा- उपवास से भक्तों को शक्ति, सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

शारदीय नवरात्र में कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त और विधि।

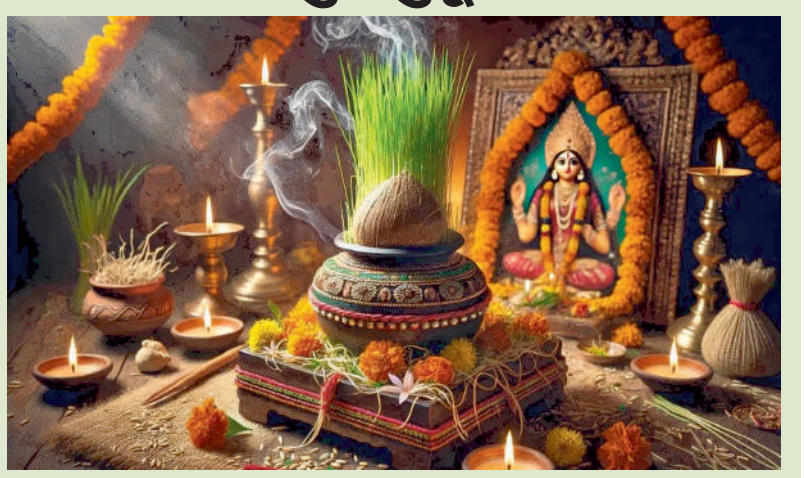

वैदिक पंचांग के अनुसार इस बार शारदीय नवरात्र की शुरुआत 22 सितंबर से हो रही है जिसका समापन 01 अक्टूबर को होगा।

नवरात्र के प्रथम दिन कलश स्थापना के दौरान जौ बोए जाते हैं। इसके बिना पूजा अधूरी मानी जाती है। इससे साधक को शुभ फल मिलता है।

शारदीय नवरात्र घट स्थापना मुहूर्त।

नवरात्र के पहले दिन घट स्थापना के लिए 2 मुहूर्त बन रहे हैं, जो इस प्रकार है।

1- घट स्थापना मुहूर्त

सुबह 06 बजकर 09 मिनट से 08 बजकर 06 मिनट तक

2- घट स्थापना अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11 बजकर 49 मिनट से दोपहर 12 बजकर 38 मिनट तक

कैसे करें घट स्थापना।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, नवरात्र में घट स्थापना करने से मां दुर्गा प्रसन्न होती हैं और पूजा का पूर्ण फल मिलता है। कलश स्थापना के लिए चांदी, मिट्टी या तांबे के कलश का चयन करें। सुबह स्नान करने के बाद मंदिर की साफ-सफाई कर लें। घटस्थापना की जगह पर गंगाजल का छिड़काव करें। हल्दी से अष्टदल बनाएं।

अब कलश में जल भर लें और गंगाजल डालें। इसके अलावा कलश में सिक्का, फूल और अक्षत डालें। नारियल को लाल चुनरी में लपेटकर कलश के ऊपर रख दें। कलश पर रोली से तिलक करें। दिपक प्रज्वलित कर मां दुर्गा का ध्यान करें।

कलश स्थापना का मंत्र।

कलश स्थापना करते समय इस मंत्र को बोले- ऊं आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशतादयिः।।

यह मंत्र देवी दुर्गा की शक्ति और करुणा का आह्वान करने के लिए जपा जाता है, जिससे जीवन में सुख, समृद्धि और शांति की प्राप्ति होती है।

"ऊँ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।"

जय माता दी

शारदीय नवरात्रि की शुरुआत आज से

हर साल आने वाला शारदीय नवरात्रि का पर्व, मां दुर्गा की भक्ति और शक्ति का प्रतीक होता है। शक्ति की साधना के इस पावन पर्व में देवी के नौ रूपों की पूजा होती है और घर-घर में मां भगवती के स्वागत की तैयारी होती है। नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना के साथ इस महापर्व की शुरूआत होती है। साल 2025 में शारदीय नवरात्रि की शुरुआत 22 सितंबर 2025, सोमवार से हो रही है।

घटस्थापना की तिथि और समय

==========

पंचांग के अनुसार, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि 22 सितंबर की रात 01:23 बजे शुरू होगी और 23 सितंबर की रात 02:55 बजे तक रहेगी। सनातन मान्यताओं के अनुसार, उदय काल में शुरू होने वाली तिथि ही मान्य होती है। इस तरह 22 सितंबर को ही घटस्थापना और मां दुर्गा की पूजा का दिन रहेगा।

घटस्थापना का शुभ समय सुबह 06:09 बजे से 08:06 बजे तक है। इसके अलावा, अगर कोई इस समय पूजा न कर सके, तो अभिजीत मुहूर्त में यानी 11:49 से 12:38 तक भी घटस्थापना की जा सकती है।

पहले दिन बन रहे शुभ संयोग

==========

नवरात्रि की शुरुआत इस बार बेहद शुभ मानी जा रही है क्योंकि इस दिन शुक्ल और ब्रह्म योग जैसे सकारात्मक संयोग बन रहे हैं। इन योगों में पूजा करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं और घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है।

घटस्थापना की संपूर्ण विधि

==========

घटस्थापना से पहले घर और पूजा स्थल की सफाई करें। सुबह स्नान करके साफ कपड़े पहनें, अगर संभव हो तो बिना सिलाई वाले वस्त्र पहनें। अब पूजा स्थल पर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें।

कलश की तैयारी

==========

-मिट्टी में बालू और सात प्रकार की मिट्टी मिलाकर छोटा चबूतरा बनाएं।

-कलश को साफ करके उस पर स्वास्तिक बनाएं और सिंदूर लगाएं।

-कलश के गले में मोली बांधें और उसमें जौ और सात अनाज रखें।

-फिर उसमें साफ जल भरें, साथ ही चंदन, फूल, सुपारी, पान, सिक्का, और सर्व औषधियां डालें।

-अब पंच पल्लव (आम के पत्ते या अन्य पत्ते) रखें।

-एक मिट्टी के बर्तन में चावल भरें और उसे कलश के ऊपर रखें।

-अंत में एक नारियल लेकर उस पर लाल कपड़ा लपेटें और कलश के ऊपर रखें।

पूजा के साथ करें कलश स्थापना

==========

अब पूरे श्रद्धा भाव से पूजा करें और कलश को देवताओं का प्रतीक मानते हुए उसमें सभी शक्तियों का आह्वान करें। भगवान वरुण, देवी पृथ्वी, देवगण, वेद, दिक्पाल - सभी को कलश में आमंत्रित किया जाता है। यह प्रार्थना की जाती है कि नवरात्रि के नौ दिन कोई विघ्न न आए और पूजा सही ढंग से पूरी हो।

देवी के आगमन की शुरुआत

==========

कलश स्थापना के बाद से ही मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा का क्रम शुरू होता है। हर दिन अलग-अलग रूपों का पूजन किया जाता है। नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की आराधना होती है। नवरात्रि के न सिर्फ पहले दिन बल्कि पूरे 9 दिनों में मां भगवती के सामने दीपक जलाकर, धूप-दीप और नैवेद्य अर्पित करें। रोज सुबह और शाम मां की आरती और दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

शारदीय नवरात्र 2025 तिथि लिस्ट (कब होगी किस देवी की पूजा)

22 सितंबर 2025 नवरात्र पहला दिन - मां शैलपुत्री

23 सितंबर 2025 नवरात्र दूसरा दिन - मां ब्रह्मचारिणी

24 सितंबर 2025 नवरात्र तीसरे दिन - मां चंद्रघंटा

25 सितंबर 2025 नवरात्रि तीसरे दिन - मां चंद्रघंटा

26 सितंबर 2025 नवरात्रि चौथा दिन - मां कूष्माण्डा

27 सितंबर 2025 नवरात्रि पांचवां दिन - मां स्कंदमाता

28 सितंबर 2025 नवरात्रि छठा दिन - मां कात्यायनी

29 सितंबर 2025 नवरात्रि सातवां दिन - मां कालरात्रि

30 सितंबर 2025 नवरात्रि आठवा दिन - मां महागौरी/ सिद्धिदात्री

01 अक्टूबर 2025 नवरात्रि नौवां दिन - मां सिद्धिदात्री

घटस्थापना शुभ मुहूर्त (Kalash Sthapana Muhurat)

हिंदू पंचांग के अनुसार, 22 सितंबर को घटस्थापना का शुभ समय सुबह 06 बजकर 09 मिनट से लेकर सुबह 08 बजकर 06 मिनट तक रहेगा। वहीं, अभिजीत मुहूर्त11 बजकर 49 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 38 मिनट तक रहेगा। इस दौरान भी साधक घटस्थापना कर सकते हैं।

पूजा मंत्र

1. सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

2. ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

3. या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

देवी दुर्गा के सोलह नाम और उनका अर्थ

देवी की पूजा सबसे पहले किसने और कहां शुरु की, फिर मनुष्यों में देवी पूजन की परम्परा कैसे शुरु हुई ? जानें, वेद में बताए गए देवी के अत्यंत मंगलकारी नाम।

देवी दुर्गा परमात्मा श्रीकृष्ण की शक्तिरूपा हैं। वे देवताओं और मनुष्यों द्वारा स्मरण करने पर उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करती हैं और उनके भय और दुःख का नाश कर देती हैं। इसीलिए सबसे पहले परमात्मा श्रीकृष्ण ने सृष्टि के आदिकाल में गोलोक स्थित वृन्दावन के रासमण्डल में देवी की पूजा की थी।

दूसरी बार भगवान विष्णु के सो जाने पर मधु और कैटभ से भय होने पर ब्रह्माजी ने उनकी पूजा की। तीसरी बार त्रिपुर दैत्य से युद्ध के समय महादेवजी ने देवी की पूजा की। चौथी बार दुर्वासा के शाप से जब देवराज इन्द्र राजलक्ष्मी से वंचित हो गए तब उन्होंने देवी की आराधना की थी। तब से मुनियों, सिद्धों, देवताओं तथा महर्षियों द्वारा संसार में सब जगह देवी की पूजा होने लगी।

वेद में वर्णित दुर्गा के कल्याणकारी 16 नाम और उनका अर्थ

वेद की कौथुमी शाखा में दुर्गा के सोलह नाम बताये गये हैं जो सबके लिए बहुत ही कल्याणकारी हैं-

दुर्गा, नारायणी, ईशाना, विष्णुमाया, शिवा, सती, नित्या, सत्या, भगवती, सर्वाणी, सर्वमंगला, अम्बिका, वैष्णवी, गौरी, पार्वती और सनातनी।

भगवान विष्णु ने इन सोलह नामों का अर्थ इस प्रकार किया है-

१. दुर्गा-दुर्ग + आ। 'दुर्ग' शब्द का अर्थ दैत्य, महाविघ्न, भवबंधन, कर्म, शोक, दुःख, नरक, यमदण्ड, जन्म, भय और रोग है। 'आ' शब्द 'हन्ता' का वाचक है। अतः जो देवी इन दैत्य और महाविघ्न आदि का नाश करती हैं, उसे 'दुर्गा' कहा गया है।

२. नारायणी-यह दुर्गा यश, तेज, रूप और गुणों में नारायण के समान हैं तथा नारायण की ही शक्ति हैं, इसलिए 'नारायणी' कही गयी हैं।

3. ईशाना-ईशान + आ। 'ईशान' शब्द सम्पूर्ण सिद्धियों के अर्थ में प्रयोग किया जाता है और 'आ' शब्द दाता का वाचक है। अतः वह सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली 'ईशाना' कही जाती हैं।

४. विष्णुमाया-सृष्टि के समय परमात्मा विष्णु ने माया की सृष्टि कर समस्त विश्व को मोहित किया। वह विष्णुशक्ति माया ही 'विष्णुमाया' कही गयी हैं।

५. शिवा-शिव + आ। 'शिव' शब्द कल्याण का और 'आ' शब्द प्रिय और दाता का वाचक है। अतः वह कल्याणस्वरूपा हैं, शिवप्रिया हैं और शिवदायिनी हैं; इसलिए 'शिवा' कही गयी हैं।

६. सती-देवी दुर्गा प्रत्येक युग में विद्यमान, पतिव्रता एवं सद्बुद्धि देने वाली हैं। इसलिए उन्हें 'सती' कहते हैं।

७. नित्या-जैसे भगवान नित्य हैं, वैसे ही भगवती भी 'नित्या' हैं। प्रलय के समय वे अपनी माया से परमात्मा श्रीकृष्ण में विलीन हो जाती हैं। अतः वे 'नित्या' कहलाती हैं।

८. सत्या-जिस प्रकार भगवान सत्य हैं, उसी तरह देवी दुर्गा सत्यस्वरूपा हैं। इसलिए 'सत्या' कही जाती हैं।

९. भगवती-'भग' शब्द ऐश्वर्य के अर्थ में प्रयोग होता है, अतः सम्पूर्ण ऐश्वर्य आदि प्रत्येक युग में जिनके अंदर विद्यमान हैं, वे देवी दुर्गा 'भगवती' कही गयी हैं।

१०. सर्वाणी-देवी दुर्गा संसार के समस्त प्राणियों को जन्म, मृत्यु, जरा और मोक्ष की प्राप्ति कराती हैं इसलिए 'सर्वाणी' कही जाती हैं।

११. सर्वमंगला-'मंगल' शब्द का अर्थ मोक्ष है और 'आ' शब्द का अर्थ है दाता। अतः जो मोक्ष प्रदान करती हैं उन्हें 'सर्वमंगला' कहते हैं।

१२. अम्बिका-देवी दुर्गा सबके द्वारा पूजित और वन्दित हैं तथा तीनों लोकों की माता हैं, इसलिए 'अम्बिका' कहलाती हैं।

१३. वैष्णवी-देवी श्रीविष्णु की भक्ता, और उनकी शक्ति हैं। सृष्टिकाल में विष्णु के द्वारा ही उनकी सृष्टि हुई है इसलिए उन्हें 'वैष्णवी' कहा जाता है।

१४. गौरी-भगवान शिव सबके गुरु हैं और देवी उनकी प्रिया हैं; इसलिए उनको 'गौरी' कहा गया है।

१५. पार्वती-देवी पर्वत गिरिराज हिमालय की पुत्री हैं, पर्वत पर प्रकट हुई हैं और पर्वत की अधिष्ठात्री देवी हैं इसलिए उनहें 'पार्वती' कहते हैं।

१६. सनातनी-'सना' का अर्थ है सर्वदा और 'तनी' का अर्थ है विद्यमान। सब जगह और सब काल में विद्यमान होने से वे देवी 'सनातनी' कही गयीं है।

भगवान की वाणी गीता है, भक्त की वाणी रामायण है

शिक्षा दो प्रकार से दी जाती है---कहकर और करके | गीता में कहकर शिक्षा दी गयी है और रामायण में करके शिक्षा दी गयी है | मानव शरीर भगवान्-की कृपा से मिलता है | चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए जीव को भगवान् बीच में ही कृपा करके मानवशरीर देते हैं | यह अवकाश देते हैं | यह शरीर देवताओं के लिये भी दुर्लभ है | शंकराचार्यजी लिखते हैं -

दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकम् |
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ||
(विवेकचूडामणि *)

भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है, वे मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व और महापुरुषों का संग-ये तीनों ही दुर्लभ हैं |

बिना हेतु प्राणि मात्र का हित करने वाले दो ही हैं---भगवान् और उनके भक्त---

हेतु रहित जग जुग उपकारी | तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ||
(मानस 7 | 47 | *)

प्रत्येक परिस्थिति में भगवान्-की कृपा है | अनुकूल परिस्थिति में भी दया है, प्रतिकूल परिस्थिति में भी दया है | माँ लड्डू सब बालकों को देती है, पर थप्पड़ अपने बालक को ही लगाती है | अपनेपन में जो प्यार है, वह लड्डू में नहीं है |

भगवान् की कृपा की तरफ ही देखते रहें-

तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणाः |
(श्रीमद्भा0 10 | 14 | 8)

दुःख { प्रतिकूल परिस्थिति } आनेपर पुराने पापों का नाश होता है और नया विकास होता है |

भगवान्-की कृपा को देखो, सुख-दुःख को मत देखो | माता कुन्ती ने विपत्ति का वरदान माँगा था | परिस्थिति को मत देखो, उसे भेजने वाले { दाता } को देखो |

संसार का वियोग नित्य है और भगवान्-का योग नित्य है | सर्वसमर्थ भगवान्-में यह ताकत नहीं कि वे जीव से अलग हो जायँ!

गीता में वासुदेवः सर्वम् को सबसे ऊँचा ज्ञान बताया गया है | आप देखोगे तो दीखने लग जायगा | पहले भी भगवान् थे, पीछे भी भगवान् रहेंगे और बीच में भी भगवान् ही हैं--ऐसा मान लो तो फिर कहाँ बन्धन है ?

संसार से सुख लेने वाला कभी दुःख से बच सकता ही नहीं | दूसरों को सुख देने वाले, सेवा करने वाले के पास दुःख फटक सकता ही नहीं |

'सेवा पखवाड़ा' हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि पीएम मोदी चाहते हैं कि उनका जन्मदिन सेवा कार्य के माध्यम से मनाया जाए : मनोज तिवारी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नईदिल्ली : देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस पर चल रहे सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज सुबह 7 बजे देशभर के 75 स्थानों पर एक साथ युवाओं को नशा मुक्ति के लिए जागरूक करने के लिए 'नमो युवा रन' का आयोजन किया गया। इस सीरीज में आज दिल्ली विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में 'नमो युवा रन' का आयोजन किया गया।

दिल्ली भाजपा युवा मोर्चा द्वारा आयोजित नमो युवा रन को सांसद मनोज तिवारी, दिल्ली भाजपा सह प्रभारी डॉक्टर अलका गुर्जर एवं पद्मश्री सम्मानित एथलीट सुधा सिंह ने भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री पवन राणा, केन्द्रीय राज्य मंत्री राजभूषण चौधरी, पद्मश्री सम्मानित एथलीट सुधा सिंह, कार्यक्रम के संयोजक प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल और दिल्ली भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष सागर त्यागी की उपस्थिति में फ्लैग ऑफ कर इस मैराथन की शुरुवात की।

पद्मश्री सुधा सिंह दिल्ली के युवाओं के बीच खेल कूद को प्रोत्साहन देने और नशा विरोधी अभियान चलाने का काम करेंगी।

इस मौके पर युवा मोर्चा प्रभारी अभिषेक टंडन एवं सुमित सेठ , प्रदेश कार्यालय मंत्री ब्रजेश राय और अमित गुप्ता, मोर्चा महामंत्री अरुण दराल, पुनीत शर्मा और गौरव जौरासिया सहित कई अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विष्णु मित्तल ने कहा की पद्मश्री सुधा सिंह दिल्ली के युवाओं के बीच खेल कूद को प्रोत्साहन देने और नशा विरोधी अभियान चलाने का काम करेंगी।

इस मौके पर मनोज तिवारी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज हमने दिल्ली में एक बड़ी मैराथन का आयोजन किया, लोगों को आमंत्रित किया और बड़ी संख्या में युवा इसमें शामिल हुए। यह 5 किलोमीटर की मैराथन जल्द ही समाप्त होगी। प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित यह 'सेवा पखवाड़ा' हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि मोदी जी चाहते हैं कि उनका जन्मदिन सेवा कार्यों और नई पहलों के माध्यम से मनाया जाए।"

मनोज तिवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संकल्प से यह दिखा दिया कि अगर संकल्प करें तो देश ही नहीं बल्कि विश्व के अलग अलग देश भी भारत के सामने झुकने को तैयार है।

उन्होंने सभी को शपथ दिलाई और कहा कि हम युवा भारत का वर्तमान भी है और भविष्य भी हैं। हम नशे से दूर रहने और अपने तन मन को सुरक्षित रखने और इस नशे की बुराई के खिलाफ डट कर खड़े रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। अपनी जिम्मेदारी स्वयं परिवार और राष्ट्र के लिए निभाने की शपथ लेते हैं

केंद्रीय राज्य मंत्री राजभूषण चौधरी ने कहा कि सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज जो नमो युवा रन का आयोजन किया गया है इसका उद्देश्य देश की युवाओं को नशा मुक्ति करने का संदेश देना है ताकि युवा वर्ग विकसित भारत में अपना अहम योगदान दे सके। उन्होंने कहा कि स्वस्थ दिल्ली बनाने के लिए और देश को नशा मुक्त बनाने के लिए आज एक थीम के साथ युवा मैदान में उतरे और मैराथन के माध्यम से आज एकत्रित हुए तकरीबन 5000 छात्रों ने इसमें पार्टिसिपेट किया और पूरे देश भर में आज युवा मोर्चा के माध्यम से कार्यक्रम हो रहा है। हमारा भारत है स्वस्थ होगा नशा मुक्त होगा।

डॉक्टर अल्का गुर्जर ने कहा कि यह दौड़ न केवल प्रधानमंत्री के जन्मदिवस को सेवा पर्व के रूप में मनाने का प्रतीक है, बल्कि युवाओं में स्वस्थ और नशा मुक्त जीवन की प्रेरणा देने का संदेश भी है। इसलिए इसमें भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को बधाई देती हूँ ताकि वह देश के विकास में अपना योगदान दे सके।

सागर त्यागी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सेवा पखवाड़े के तहत हम लोग विभिन्न तरह के कार्यक्रम इसमें करते हैं। इस बार नमो युवा रन के नाम से हमने कार्यक्रम किया जो युवा मोर्चा ने पूरे देश भर में किया अन्य कार्यक्रम भी साथ-साथ सेवा पखवाड़े के अंतर्गत चल रहे हैं, लेकिन मैराथन में हमने देखा कि कैसे इसमें युवाओं का संघ साथ देखने को मिला। सामने से युवा पार्टिसिपेट करने के लिए आया। दिल्ली नशा मुक्त बनें इस संदेश को लेकर दिल्ली का युवा मोर्चा घर-घर तक जाएगा।

आत्मनिर्भर भारत : भारत को विश्वगुरु बनाना हमारे हाथ में है : डॉ. अंकुर शरण

"चिप हो या शिप, हमें भारत में ही बनाना होगा।"

आज का यह संकल्प केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की क्रांति की गूंज है। यह वह जज़्बा है जिसने हम सभी में नया जोश और अटूट विश्वास जगाया है।

हमें यह भरोसा रखना होगा कि सही को सही और ग़लत को ग़लत कहने का साहस हममें है। राष्ट्र के इस परिवर्तनकारी सफ़र में हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है कि हम एक मज़बूत इकोसिस्टम का निर्माण करें, जो उन तमाम बाधाओं का मुकाबला कर सके जो हमारी प्रगति के रास्ते में रोड़ा बनती हैं।

अब वक्त आ गया है कि हम केवल सोचने तक सीमित न रहें, बल्कि एक्शन लेने का समय है। हमें अपने टैलेंट पर भरोसा करना होगा और जिस भी सही मंच से हम जुड़ सकते हैं, वहाँ पूरी निष्ठा के साथ काम करना होगा। यही भारत को चमकाने का रास्ता है।

भारत दुनिया का एक सबसे बड़ा बाज़ार है और हमारी ताकत है कि हम विश्व व्यापार का नेतृत्व कर सकते हैं। आज एक्सपोर्ट-इंपोर्ट का सबसे बड़ा माध्यम शिपिंग है और लॉजिस्टिक्स उसका असली रीढ़। एक लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल के तौर पर मैं देख रहा हूँ कि हमारे पास कितनी बड़ी संभावनाएँ हैं—यदि हम इन्हें सही दिशा दें तो भारत निश्चित ही दुनिया का नेतृत्व कर सकता है।

अब समय है—

आलस्य छोड़कर शेर की तरह जागने का,

नई स्किल्स सीखने का,

टीम से जुड़कर मज़बूत समुदाय बनाने का।

मैं स्वयं इस दिशा में प्रयासरत हूँ—MSME, NSIC, कॉरपोरेट, इंडस्ट्री, संस्थानों, विद्यालयों और सामाजिक संगठनों जैसे इकोसिस्टम पार्टनर्स के साथ मिलकर। हमारा लक्ष्य है एक ऐसा भारत जहाँ हर युवा के हाथ में कौशल हो, हर नागरिक के दिल में आत्मविश्वास हो और हर समाज में विकास का रास्ता खुला हो।

आइए, आत्मनिर्भर भारत के इस आंदोलन को आगे बढ़ाएँ— सीखें, जुड़ें और बदलें।

drlogistics.ankur@gmail.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ₹#सेवा_पखवाड़ा₹ के अंतर्गत चाँदनी चौक जिले मे आयोजित प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन को संबोधित किया व प्रधानमंत्री जी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया, समाज के विभिन वर्गों से आए विशिष्ट जनो को मोदी जी की नीतियों और व्यक्तिव के बारे मे विस्तार से बताया,, कार्यक्रम की अध्यक्षता चांदनी चौक जिला के अध्यक्ष श्री अरविंद गर्ग जी ने की इस अवसर पर दक्षिण दिल्ली के प्रभारी श्री जयप्रकाश जी उपस्थित रहे, और भारी संख्या में चांदनी चौक क्षेत्र में रहने वाले विशिष्ट जन RWA ट्रेडर्स association, स्थानीय लोग और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया -राजेश भाटिया।

सेवा पखवाड़ा के तहत अग्रसेन वाटिका महरौली में वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन धूमधाम से संपन्न

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस पर सेवा पखवाड़ा के तहत महरौली जिला भाजपा की ओर से अग्रसेन वाटिका महरौली में प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन का शानदार आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉक्टर रविंद्र चौधरी एवं सह संयोजक भाजपा के वरिष्ठ नेता इंदराज पहलवान को बनाया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिणी दिल्ली के जुझारू, कर्मठ सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी, भाजपा दिल्ली प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल, छतरपुर के विधायक करतार सिंह तंवर, महरौली के विधायक गजेंद्र यादव, महरौली जिला अध्यक्ष रविंद्र सोलंकी, महरौली जिला प्रवक्ता एडवोकेट हरीचंद जाखड़ के अलावा सभी मंडल अध्यक्ष पूर्व जिला अध्यक्ष एवं सैकड़ो की संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। सांसद बिधूड़ी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अभूतपूर्व उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर मोदी जी के जीवन एवं उपलब्धियों पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी दिखाई गई, जिसको लोगों ने काफी सराहा। कार्यक्रम के उपरांत सभी के लिए अल्पाहार की भी व्यवस्था की गई थी।

रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 दिल्ली एनसीआर की उत्तम मंचन करने वाली रामलीला को करेगी सम्मानित

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। मीडिया प्रेस क्लब दिल्ली एनसीआर में उत्तम मंचन करने वाली रामलीला को जिला एवं दिल्ली एनसीआर स्तर पर रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 से सम्मानित करेगी। रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 दिल्ली एनसीआर के मशहूर पुरस्कार है बड़े रामलीला आयोजक इस पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए अपनी रामलीला की तैयारी रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 की दिशा निर्देश अनुसार करते हैं। प्रेसवार्ता में मीडिया प्रेस क्लब के अध्यक्ष अशोक लालवानी* ने पत्रकारों को बताया रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 में भाग लेने का 20 सितम्बर 2025 अंतिम दिन था। जितनी भी रामलीला ने रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 के लिए भाग लिया है उन सभी को 22 सितम्बर 2025 को भाग लेने वाली प्रत्येक रामलीला में 1 रामलीला जज जो अपने परिवार के साथ रामलीला का अवलोकन करने के लिए जाएंगे उनके द्वारा रामलीला

का जज किया जाएगा उन रामलीला जजों के निर्णय के आधार पर प्रत्येक जिले से 6 रामलीला चुनी जाएगी। फिर दूसरे दिन से 2 रामलीला जजों द्वारा रामलीला को जज किया जाएगा। रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 के मुख्य रामलीला जज महाराज संत त्रिलोचन दर्शन दास जी रहेंगे। और 26 सितम्बर 2025 को किसी एक विशेष रामलीला को विशेष रामलीला जज आचार्य भुवन्यू शंकर शर्मा के नेतृत्व में होगा। 27 सितम्बर 2025 को उत्तम मंचन करने वाली रामलीला का घोषणा की जायगी और उसी दिन से उनके रामलीला के मंच पर रामलीला को सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर *आचार्य भुवन्यू शंकर शर्मा* (विशेष जज, रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार) ने कहा मैं एक विशेष रामलीला को अपने साथ 2 जजों और पत्रकारों सहित रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 को अपना सहयोग देने वाले 30 से अधिक परिवारों को लेकर रामलीला का जज करूंगा। मैं अपने और अपने साथी रामलीला जजों के निर्णय को मुख्य रामलीला जज महाराज संत त्रिलोचन दर्शन दास को दूंगा वो हमारे निर्णय के आधार पर रामलीला को जिला स्तर पर प्रथम और द्वितीय रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर कृष पटेल (प्रमुख प्रायोजक और निदेशक प्राइम कंफर्ट प्राइवेट लिमिटेड) ने कहा हम रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 से 2013 से जुड़े हुए है रामलीला भावी पीढ़ी को संस्कार देने का एक उत्तम साधन है। रामलीला आयोजकों को अगले वर्ष और बेहतर करने के लिए सम्मान करने की जरूरत है। इसी जरूरत को रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 पूरा करता है।

इस अवसर पर योगेश जगतरामका (प्रचार प्रायोजक और अध्यक्ष, क्लब एनपीसी इंडिया) ने कहा कोई भी पुरस्कार किसी को विशेष नही बनाता बल्कि पुरस्कार से और बेहतर करने की प्रेरणा देती है इसी मकसद को रिफ्रेश दशहरा पुरस्कार 2025 पूरा करता है। इस अवसर पर शिखा मिश्रा (प्रायोजक रिफ्रेश महामुकाबला दशहरा पुरस्कार 2025 और प्रबंध निदेशक डेकोरा) रिफ्रेश महामुकाबला दशहरा पुरस्कार 2025 दिल्ली एनसीआर की रामलीला को उत्तम 10 स्थान पर होने वाली रामलीला को देगी इस बार रामलीला में रावण के बेहतर संवाद के आधार पर 7 जजों के निर्णय पर दिया जाएगा।

साजा एनजीओ ने फ़न वे लर्निंग एनजीओ के बच्चों को गतिविधियाँ करवायीं और बच्चों को प्रमाण पत्र दिए।

डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड की घोषणा

प्रोफेसर मनोज कुमार कैन को साहित्य एवं समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ अम्बेडकर नेशनल अवार्ड - 2025 दिया जाएगा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। संविधान शिल्पी, आधुनिक भारत के निर्माता, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस (शिक्षक संगठन) ने वर्ष - 2025 के डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड की घोषणा की है। डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड के लिए फोरम ने एक ज्यूरी का गठन किया था, इसमें प्रोफेसर के.पी. सिंह, डॉ. के. योगेश, प्रो. जय गोपाल शर्मा, प्रो. हरिओम दहिया, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. बलवान सिंह आदि थे। ज्यूरी ने प्रो. बालाराम पाणि के नाम को प्रस्तावित किया। इसके बाद फोरम के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने दिल्ली विश्वविद्यालय में डीन ऑफ कॉलेजिज प्रो बालाराम पाणि को वर्ष - 2025 का डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड दिए जाने की घोषणा की है। सम्मान स्वरुप उन्हें 11 हजार रुपये , स्मृति चिन्ह , प्रशस्ति पत्र , शॉल व पटका आदि देकर सम्मानित किया जाएगा । इसके अलावा 20 अन्य शिक्षा, साहित्य, समाजसेवा, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को पुरस्कृत किया जाएगा। जो निम्न है --प्रो. संजीव तिवारी , प्रो. अरुण चौधरी , प्रो. अजय कुमार भागी (पूर्व डूटा अध्यक्ष) प्रो. मनोज कुमार कैन (साहित्य एवं समाजसेवा) प्रो. नीलम राठी (पत्रकारिता) प्रो. रमा शर्मा (लेखिका एवं प्राचार्या हंसराज कॉलेज) श्री अशोक दास (टीवी पत्रकार) श्री मनोज वर्मा (वरिष्ठ पत्रकार संसद टीवी) डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर (दलित चिंतक) प्रो. पी.डी. सहारे (अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक) श्री सौरभ भटनागर (प्रसिद्ध समाजसेवी) श्री धर्मेंद्र डागर (पत्रकारिता) श्री राजीव दुबे , श्री अजय कुमार शुक्ला आदि हैं।

फोरम के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने बताया है कि प्रो. पाणि को डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड फोरम द्वारा आयोजित 6 दिसम्बर - 2025 को दिल्ली में एक कार्यक्रम में दिया जाएगा। यह अवार्ड प्रति वर्ष समाज में अत्यंत पिछड़े वर्ग, वंचित समाज के लिए काम करने वाले एवं दलित समुदाय को उनके अधिकार दिलाने के लिए तथा उनको राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाने और उन्हें मुख्यधारा में लाने के प्रयास करने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों को दिया जाता है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा भारत के बहुजनों के लिए देखें गए सपनों के नक्शे कदम पर चलते हुए समाज में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति इन प्रयासों में लगे हुए है, जिनमें प्रो बालाराम पाणि एक महत्वपूर्ण नाम है । बता दें कि प्रोफेसर पाणि भास्कराचार्य कॉलेज के प्रिंसिपल के साथ - साथ रसायन विज्ञान के जाने - माने प्रोफेसर हैं जो पिछले तीन दशक से अधिक समय से दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत्त हैं। आपने विज्ञान और समाज विषय पर कई पुस्तकें लिखी हैं जो शोधार्थियों के लिए शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं ।

डॉ. सुमन के अनुसार प्रो पाणि दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध भास्कराचार्य कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंस में लंबे समय तक रसायन विज्ञान के शिक्षक व प्रिंसिपल के पद पर कार्यरत रहे हैं । दिल्ली विश्वविद्यालय में डीन ऑफ कॉलेजिज बनने के बाद आपके नेतृत्व में एक दशक से रुकी हुई शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति व पदोन्नति को शुरू कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रोफेसर पाणि ने कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह की टीम के साथ मिलकर अभी तक विभागों व संबद्ध कॉलेजों में 5000 शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति व 22000 से अधिक पदोन्नति कराई है जो कि विश्वविद्यालय के इतिहास में कभी इतने बड़े पैमाने पर नियुक्ति व पदोन्नति नहीं हुई थी । आपके द्वारा समाज के वंचित वर्गों के साथ सामाजिक न्याय की अवधारणा को पूरा किया गया इसीलिए फोरम आपको सम्मानित करते हुए अपने को गौरान्वित अनुभव कर रही है ।

वृन्दावन में संस्कृति, अध्यात्म और मानसिक स्वास्थ्य विषय पर हो रहा है सीआईपीकॉन 2025 सम्मेलन

कार्यक्रम में ब्रज सेवा संस्थान के द्वारा किया गया मनोचिकित्सकों का सम्मान

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दाव। छटीकरा रोड़ स्थित होटल रेडिशन में सीआईपीकॉन 2025 सम्मेलन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ चल रहा है। जिसका मुख्य विषय है — "संस्कृति, अध्यात्म और मानसिक स्वास्थ्य।"

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री लक्ष्मी नारायण चौधरी जी, जिन्होंने दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने संबोधन में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐसे आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला और इस प्रयास के लिए आयोजकों को हार्दिक बधाई दी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सविता मल्होत्रा, अध्यक्ष, इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी (IPS) ने समारोह की शोभा बढ़ाई। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में आधुनिक शोध और पारंपरिक मूल्यों के संतुलन पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के मनोचिकित्सक प्रोफेसर डॉक्टर राजेश सागर, प्रोफेसर डॉ. सुषमा सागर, प्रोफेसर डॉ. निमेश जी. देसाई, डॉक्टर जे.पी.नारायण और डॉक्टर रंजीत चौधरी आदि को ठाकुर बांके बिहारी महाराज का चित्र पट, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह आदि भेट कर उनका सम्मान किया।

आयोजन समिति का नेतृत्व आयोजन अध्यक्ष डॉ. जे. पी. नारायण और आयोजन सचिव डॉ. रंजीत चौधरी ने किया। इनके साथ डॉ. अमरप्रीत, डॉ. श्वेता चौहान, और डॉ. मनीष बोरेसी सहित पूरी टीम के अथक प्रयासों से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजन सचिव डॉ. रंजीत चौधरी ने कहा,

₹सीआईपीकॉन 2025 का वृंदावन में आयोजन हमारे लिए एक सपना था, जो आज साकार हुआ है। हमारा उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हुए लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। देशभर से आए प्रतिष्ठित मनोचिकित्सकों और विशेषज्ञों के साथ यह मंच मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई दिशा और नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेगा।₹

उद्घाटन समारोह में देशभर से आए प्रतिष्ठित मनोचिकित्सकों, वक्ताओं और प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

यह आयोजन वृंदावन के लिए एक ऐतिहासिक क्षण सिद्ध हुआ, जो आने वाले वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर डॉ. टी.एस.एस. राव, सीपीएस अध्यक्ष डॉ. सौरभ टंडन, डॉ. रूमा भट्टाचार्य, डॉ. गणेश शंकर, डॉ. श्वेता चौहान, और डॉ. मनीष बोरेसी, डॉ. आदर्श त्रिपाठी, गोपाल शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी विशेष और सार्थक बना दिया।

तिरहुत शिक्षक सम्मान समारोह में उत्कृष्ट शिक्षकों का हुआ सम्मान

मुजफ्फरपुर के द पार्क होटल, मिठनपुरा में परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

मुजफ्फरपुर। द पार्क होटल, मिठनपुरा में रविवार को तिरहुत शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार के तत्वावधान में किया गया, जिसमें क्षेत्र के कई शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश संयोजक सह तिरहुत स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के प्रत्याशी प्रणय कुमार ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि "समाज निर्माण में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि है और शिक्षा की गुणवत्ता ही बिहार के भविष्य को दिशा देगी।"

प्रदेश सह संयोजक विजय कुमार परिवर्तनकारी,संगठन महामंत्री शिशिर कुमार पांडेय एवं कार्यकारी संयोजक नवनीत कुमार ने संयुक्त रूप से अपने वक्तव्य में कहा कि महासंघ सदैव शिक्षकों के सम्मान, अधिकार एवं दायित्वों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

वहीं, प्रदेश महासचिव अखिलेश कुमार सिंह एवं प्रदेश कोषाध्यक्ष सह प्रधान शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि महासंघ का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को एकजुट कर शिक्षा व्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाना है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश महासचिव,प्रधान शिक्षक प्रकोष्ठ जमील अहमद विद्रोही एवं प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने कहा कि यह सम्मान समारोह न सिर्फ शिक्षकों का गौरव बढ़ाता है, बल्कि समाज को यह संदेश भी देता है कि शिक्षा और शिक्षक ही बदलाव की असली ताक़त हैं।

सम्मान समारोह में मुख्य रूप से पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता नलिन कुमार, महासंघ मुजफ्फरपुर के प्रवक्ता राजीव कुमार, प्रदेश सोशल मीडिया प्रभारी प्रधान शिक्षक प्रकोष्ठ मुकेश कुमार गुप्ता, अभिभावक अवधेश प्रसाद सिंह,दिनेश कुमार सिंह,नंद किशोर सहनी, शिक्षक आनंद कुमार, सौम्या रानी,रुचि कुमारी,श्वेता ठाकुर,विभा कुमारी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, शिक्षा-प्रेमी एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

शिवम सूर्यवंशी बने भारतीय किसान यूनियन अन्नदाता के प्रदेश मीडिया प्रभारी

बाजना। भारतीय किसान यूनियन अन्नदाता के प्रदेश अध्यक्ष भूरा पहलवान ने शिवम सूर्यवंशी की संगठन के प्रति निष्ठा व भावना देखते हुए उन्हें प्रदेश मीडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश की कमान सौंपी है। वहीं भूरा पहलवान ने बताया की शिवम सूर्यवंशी जो की बाजना नगर के निवासी हैं। यह हमारे साथ काफी समय से कार्य कर रहे हैं। उनकी निष्ठा को देखते हुए हमने उन्हें संगठन में प्रदेश मीडिया प्रभारी की कमान सौंपी है वहीं शिवम सूर्यवंशी ने कहा कि मैं संगठन के प्रति

अपनी पूरी निष्ठा रखूंगा। और किसान, मजदूर, दबाब के रह रहे एवं असहाय लोगों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहूंगा। कुछ समस्या ऐसी है जो की बिना सोशल मीडिया के उजागर नहीं होती हैं मैं उन्हें मीडिया के तहत उजागर कराऊंगा और समस्याओं का समाधान करने के लिए लड़ता रहूंगा।

साथ ही जल्द ही किसानों व मजदूरों की आवाज उठाने के लिए धरना प्रदर्शन किया जाएगा। जिसमें हर विभाग से संबंधित जनता की शिकायतों और समस्याओं को मथुरा प्रशासन के समक्ष रखा जाएगा।

इसी मौके पर सौरभ, संदीप, कुशल, भूरा, कपिल, सोनू, जीतू राणा, देवेंद्र सिंह, धर्मवीर सिंह, कृष्ण गोपाल वैष्णव, राजेश चन्द्र, मोनू, आदि लोगों ने हर्ष व्यक्त किया।

पोस्टर बनाकर मनाया गया स्वच्छता सेवा पखवाडा दिवस

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गंजडुंडवारा, शिक्षा विकास समिति द्वारा नगर के ज्ञान दीप विद्या मंदिर पूर्व माध्यमिक विद्यालय रामछितौनी मै स्वच्छता ही सेवा पखवाडा दिवस पर प्रधानाचार्य पवन सक्सेना नें स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। विद्यालय की छात्रा कु स्नेहा नें पोस्टर के माध्यम सें सभी छात्र छात्राओं को स्वच्छता के विषय मै जानकारी दी विद्यालय की छात्राएं केशवी राठौर अंजलि यादव दीक्षा गुड़यि सोलंकी नें भी स्वच्छता के बारे मै बताया ।कार्यक्रम मै संजय कुमार अनीता प्रजापति मानसी रजनी वंदना सोलंकी खुशबू सोलंकी सहित समस्त स्टॉफ उपस्थित रहे।

दो महीने से लापता दूल्हे का नहीं मिला सुराग, शादी के दो दिन बाद गायव हुआ, पिता ने एसपी से लगाई गुहार

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज, कासगंज जनपद के थाना सिकंदरपुर वैश्य क्षेत्र के गांव निविया निवासी 23 वर्षीय गंगा दयाल जो कि दूल्हा था अपनी शादी के 2 दिन बाद ही रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गया दो माह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद पुलिस अब तक उसका कोई सुराग नहीं लगा पाई है इस मामले में नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज होने के बाद भी कार्रवाई न होने पर परिजनो ने पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाए हैं पीड़ित पिता सतपाल के अनुसार 3 जुलाई को करीमनगर उसहैत बदायूं में उनके पुत्र गंगा दयाल की शादी समारोह था इसी दौरान वधू पक्ष से विवाद हो गया आरोप है कि वधू पक्ष के लोगों ने मारपीट कर बिना वर वधू के बारात भाग दी और अगले दिन वर वधू को घर छोड़ गए पीड़ित पिता ने बताया कि 5 जुलाई की रात नामजद आरोपियों ने अपके पुत्र गंगा दयाल दूल्हे को फोन पर बुलाया और अपने साथ भी गए तभी से वह रहस्यमय तरीके से लापता है जिसकी 6 जुलाई को गुमशुदगी दर्ज कराई गई और 29 अगस्त को ग्रीस सीमा पातीराम निवासी उसहैत बदायूं व रामदत्त निवासी सिकंदरपुर वैश्य के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज कराया गया सत्यपाल का कहना है कि दो माह से पुलिस सिर्फ आश्वासन दे रही है जबकि उनके पुत्र के साथ किसी अनहोनी की आशंका गहराती जा रही है इस पर उन्होंने एसपी अंकिता शर्मा से विवेचना किसी अन्य थाने को सौंपने ओर पुत्र की बरामदगी की गुहार लगाइए है

शारदीय नवरातत्रा 2025 - गज पर सवार होके आजा शेरांवांलिएं - शेरावांलिएं मां ज्योतावांलिएं

नवरात्रि अब केवल भारत का त्योहार नहीं रहा, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन गया है

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आदि अनादि काल से भारत आध्यात्मिक, आस्था का प्रतीक रहा है, जो हजारों वर्षों पूर्व के इतिहास में दर्ज है,जिसे हम कहानियों मान्यताओं के रूप में अपने पूर्वजों, पूर्वज पीडियों और वर्तमान में बड़े बुजुर्गों से सुनते आ रहे हैं ।भारत एक सर्वधर्म धर्मनिरपेक्ष देश है जहां हिंदू मुस्लिम सिख इसाई सहित अनेकों जातियों प्रजातियों उपजातियों द्वारा अपने-अपने स्तर व मान्यताओं के अनुसार धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। किसी को कोई पाबंदी नहीं है, यही भारतीय संविधान की खूबसूरती है,यह हम आज इसलिए कह रहे हैं,क्योंकि 22 सितंबर से 1 अक्टूबर 2025 तक शुभ नवरात्रा दिवस हैं जो प्रतिवर्ष सितंबर-अक्टूबर महीने की भिन्न-भिन्न तिथियों में मनाए जाते हैं। ज्योतिषीय गणना में कभी- कभी तिथियों की वृद्धि या क्षय होता है। 2025 में चतुर्थी तिथि दो बार आ रही है,जिसके कारण यहनवरात्रि 10 दिन की मानी जाएगी। शास्त्रों के अनुसार इस स्थिति में पूजा-विधान में किसी प्रकार की कमी नहीं होती,बल्कि इसे और अधिक शुभ और मंगलकारी माना जाता है। भक्तों के लिए यह अतिरिक्त दिन साधना और देवी उपासना का अवसर है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हुँ कि भारतीय संस्कृति में नवरात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि आध्यात्मिक साधना, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का विराट पर्व है ।शारदीय नवरात्रि वर्ष में आने वाली चार नवरात्रियों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस बार 2025 की शारदीय नवरात्रि 22 सितंबर, सोमवार से प्रारंभ हो रही है और 1 अक्टूबर तक चलेगी ।सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस बार नवरात्रि 9 नहीं बल्कि 10 दिनों की होगी, क्योंकि चतुर्थी तिथि की वृद्धि (अधिमास) के कारण एक अतिरिक्त दिन जुड़ रहा है ।धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस वर्ष मां दुर्गा हाथी पर सवार होकर पृथ्वी पर आ रही हैं, जो समृद्धि, शांति और प्रगति का प्रतीक माना जाता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में देवी का हाथी पर आगमन कृषि समृद्धि, वर्षा की प्रचुरता और सामाजिक संतुलन का द्योतक है ।यह किसी एक राज्य में नहीं बल्कि अनेक राज्यों में गहरी आस्था के साथ मनाया जाता है। इस अवधि में कठोर व्रत रखा जाता है अपनी- अपनी मान्यता सार्थकता के अनुसार- चप्पल नहीं पहनना, बाल शेविंग नहीं बनाना, नीचे धरती पर सोना, ब्रह्मचर्य रहना मौन धारण करना सहित अपनी शक्ति के अनुसार अनेक प्रकारों की के बातों से दूर रहने का पालन अपनी मनोकामना पूरा करने, फल की चाहना के लिए मां दुर्गा काली से कामना करते हैं। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस बार मां दुर्गा गज यानें हाथी पर विराजमान होकर आ रही है ।कुछ वर्षा साथ सुख शांतिसमृद्धि लेकर व विसर्जन के दौरान भी वर्षा का योग है। चूंकि इस वर्ष 9 के स्थान पर 10 दिन की नवरात्त्रा विशेष महत्वपूर्ण योग लेकर आई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, शारदीय नवरात्रि 2025-गज पर सवार होके आजा शेरांवांलिएं- शेरावांलिएं मां ज्योतावांलि एं नवरात्रि अब केवल भारत का त्योहार नहीं रहा, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन गया है। शारदीय नवरात्रा पर्व याद दिलाता है कि महिला केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज की रक्षक और ऊर्जा का स्रोत भी है।

साथियों बात अगर हम इस बार 22 सितंबर से 1 अक्टूबर 2025 तक माता की सवारी और उसके महत्व की करें तो,इसबारशारदीय नवरात्रि की शुरुआत सोमवार से हो रही है और जब सोमवार के दिन से नवरात्रि शुरू होती है तो माता

का वाहन हाथी होता है। हाथी पर सवार होकर माता का आगमन अधिक वर्षा उत्सव कष्टों से मुक्ति,सुख समृद्धि का संकेत देता है। वैसे तो अलग- अलग वार याने दिन के अनुसार नवरात्रि में मां दुर्गा के वाहन डोली, नाव, घोड़ा, भैंसा, मनुष्य व हाथी होते हैं, मान्यता के अनुसार यदि नवरात्रा सोमवार या रविवार से शुरू हो रही है तो मां दुर्गा का वाहन हाथी होता है, जो अधिक वर्षा के संकेत देता है। वहीं यदि नवरात्रि मंगलवार और शनिवार शुरू होती है, तो मां का वाहन घोड़ा होता है, जो सत्ता परिवर्तन का संकेत देता है। इसके अलावा गुरुवार याशुक्रवार से शुरू होने पर मां दुर्गा डोली में बैठकर आती हैं जो रक्तपात, तांडव, जन-धन हानि का संकेत बताता है। वहीं बुधवार के दिन से नवरात्रि की शुरुआत होती है, तो मां नाव पर सवार होकर आती हैं। नाव पर सवार माता का आगमन शुभ होता है। अगर नवरात्रि का समापन रविवार और सोमवार के दिन हो रहा है, तो मां दुर्गा भैंसे पर सवार होकर जाती हैं, जिसे शुभ नहीं माना जाता है। इसका मतलब होता है कि देश में शोक और रोग बढ़ेंगे ।वहीं शनिवार और मंगलवार को नवरात्रि का समापन हो तो मां जगदंबे मुर्गे पर सवार होकर जाती हैं। मुर्गे की सवारी दुख और कष्ट की वृद्धि को ओर इशारा करता है। बुधवार और शुक्रवार को नवरात्रि समाप्त होती है, तो मां की वापसी हाथी पर होती है,जो अधिक वर्षा को ओर संकेत करता है। इसके अलावा यदि नवरात्रि का समापन गुरुवार को हो रहा है तो मां दुर्गा मनुष्य के ऊपर सवार होकर जाती हैं, जो सुख और शांति की वृद्धि की ओर इशारा करता है।

साथियों बात अगर हम नवरात्रि के प्रत्येक दिन की देवी और पूजा को समझने की करें तो (1)प्रथम दिन-शैलपुत्री,पर्वतराज हिमालय की पुत्री, शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक।(2)द्वितीय दिन- ब्रह्मचारिणी - तप, संयम और भक्ति की देवी। (3) तृतीय दिन-चंद्रघंटा-शौर्य और साहस का स्वरूप (4) चतुर्थी- कूष्मांडा- सृष्टि की अधिष्ठात्री, उर्जा की देवी।(5) पंचमी- स्कंदमाता- मातृत्व और करुणा का प्रतीक।(6) षष्ठी-कात्यायनी-युद्ध और साहस की अधिष्ठात्री।(7)सप्तमी - कालरात्रि-भय को नष्ट करने वाली शक्ति।(8)अष्टमी- महागौरी - शुद्धता और मोक्ष की देवी।(9) नवमी- सिद्धिदात्री-सिद्धियों की अधिष्ठात्री।10)दशमी- विशेष पूजन (विजयादशमी)-दुर्गा विसर्जन, शक्ति की विजय और जीवन में संतुलन।

साथियों बात कर हम कन्याओं और देवी के शास्त्रों की पूजा को समझनें की करें तो,अष्टमी को विविध प्रकार से मां शक्ति की पूजा करें, इस दिन देवी के शस्त्रों की पूजा करनी चाहिए, इस तिथि पर विविध प्रकार से पूजा करनी चाहिए और विशेष आहुतियों के साथ देवी की प्रसन्नता के लिए हवन करवाना चाहिए. इसके साथ ही 9 कन्याओं को देवी का स्वरूप मानते हुए भोजन करवाना चाहिए, दुर्गाष्टमी पर मां दुर्गा को विशेष प्रसाद चढ़ाना चाहिए। पूजा के बाद रात्रि को जागरण करते हुए भजन, कीर्तन, नृत्यादि उत्सव मनाना चाहिए, 2 साल की कन्या को कुमारी कहा जाता है,इनकी पूजा से दुख और दरिद्रता खत्म होती है। 3 साल की कन्या त्रिमूर्ति मानी जाती है, त्रिमूर्ति के पूजन से धन- धान्य का आगमन और परिवार का कल्याण होता है।4 साल की कन्या कल्याणी मानी जाती है, इनकी पूजा से सुख-समृद्धि मिलती है। 5 साल की कन्या रोहिणी माना गया है. इनकी पूजन से रोग-मुक्ति मिलती है। 6 साल की कन्या कालिका होती है. इनकी पूजा से विद्या और राजयोग की प्राप्ति होती है। 7 साल की कन्या को चंडिका माना जाता है. इनकी पूजा से ऐश्वर्य मिलता है। 8 साल की कन्या शांभवी होती है. इनकी पूजा से लोकप्रियता प्राप्त होती है। 9 साल की कन्या दुर्गा को दुर्गा कहा गया है. इनकी पूजा से शत्रु विजय और असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं। 10 साल की कन्या सुभद्रा होती है। सुभद्रा के पूजन से मनोरथ पूर्ण होते हैं और सुख मिलता है। पूरे वर्ष में,चार नवरात्रि मनाई जाती है। यह नवरात्रि शारदीय होगी, जो आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक मनाई जा रही है। इस दौरान, भक्त मां दुर्गा और उनके नौ अवतारों - नवदुर्गाओं की पूजा करते हैं। यह त्यौहार नौ दिनों तक मनाया जाता है, इसलिए सही तिथियों और कलश स्थापना के सही मुहूर्त को जानना आवश्यक है। नवरात्रि के पहले दिन ही कलश स्थापना की जाती है। मान्यता है कि कलश स्थापना मुहूर्त में ही करनी चाहिए, क्योंकि नौ दिनों यह देवी के स्वरूप में आपके निवास स्थान में विराजमान रहता है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर परनवरात्रि उत्सव 22 सितंबर से 1 अक्टूबर 2025 की करें तो,गुजरात-गरबा और डांडिया का वैश्विक प्रसिद्ध आयोजन ।पश्चिम बंगाल-दुर्गा पूजा, पंडाल और कला का अद्भुत संगम ।उत्तर भारत- रामलीला और दशहरा उत्सव।

दक्षिण भारत-गोलु प्रदर्शनी, भक्ति और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ। दुनिया में नवरात्रि- आज प्रवासी भारतीय समुदाय पूरी दुनिया में नवरात्रि को मनाता है ।अमेरिका और कनाडा-गरबा नाइट्स और दुर्गा पूजा के विशाल आयोजन ।ब्रिटेन-लंदन में दुर्गा पूजा पंडाल अंतरराष्ट्रीय आकर्षण ।ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड-भारतीय प्रवासी समुदाय का सांस्कृतिक उत्सव ।खाड़ी देश-दुबई,अबू धाबी और दोहा में विशाल गरबा महोत्सव मनाया जा रहा है ।नवरात्रि अब केवल भारत का त्योहार नहीं रहा,बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन गया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 2025 की शारदीय नवरात्रि अपनी 10 दिवसीय विशेषता, हाथी पर माता दुर्गा के आगमन और वैश्विक स्तर पर उत्सव के आयोजन के कारण ऐतिहासिक महत्व रखती है ।यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक साधना और आत्मबल में निहित है ।आज की दुनिया में नवरात्रि केवल धार्मिक पर्व न होकर सांस्कृतिक एकता, स्त्री सम्मान, पर्यावरणीय जागरूकता और वैश्विक भारतीयता का प्रतीक बन चुकी है।

15वीं शताब्दी का संत, 21वीं शताब्दी का समाधान

धरती पर कुछ ऐसे युग-प्रवर्तक व्यक्तित्व अवतरित होते हैं, जिनकी उपस्थिति काल की सीमाओं को लांघकर मानवता के मार्ग को अनंतकाल तक प्रदीप्त करती है। 22 सितंबर 1539 को गुरु नानक देव जी का देहावसान हुआ, पर यह केवल एक संत की पुण्यतिथि नहीं थी, अपितु एक ऐसी अनश्वर धारा का प्रारंभ था, जो आज भी करोड़ों हृदयों में आध्यात्मिक प्रेरणा और मानवीय मूल्यों की ज्योति प्रज्ज्वलित किए हुए है। उनकी शिक्षाएँ न केवल सिख धर्म की आधारशिला बनीं, बल्कि विश्व को एक ऐसी दृष्टि प्रदान की, जो सामाजिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान आज भी प्रस्तुत करती है। गुरु नानक का जीवन एक ऐसी दीपशिखा था, जिसने अंधकारग्रस्त समाज को न केवल प्रकाश दिखाया, बल्कि उस प्रकाश में जीने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

15वीं शताब्दी का भारत सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संकटों से जूझ रहा था। जाति व्यवस्था ने समाज को विखंडित कर दिया था, धार्मिक कट्टरता ने मनुष्यों के बीच दीवारें खड़ी कर दी थीं, और विदेशी आक्रमणों ने आर्थिक शोषण को बढ़ावा दिया था। ऐसे अंधेरे युग में गुरु नानक ने एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात किया, जो धार्मिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। उनका मूल मंत्र "इक ओंकार, सतनाम", यह उद्घोषणा थी कि ईश्वर एक है, जो किसी मंदिर, मस्जिद या समुदाय तक सीमित नहीं। यह विचार उस युग में क्रांतिकारी था, जब धार्मिक संस्थाएँ ईश्वर तक पहुँच को अपने अधीन रखती थीं। गुरु नानक ने सिखाया कि ईश्वर प्रत्येक हृदय में वास करता है, और उसे पाने के लिए किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं।

गुरु नानक की शिक्षाओं का सर्वाधिक प्रेरक पहलू उनकी सामाजिक समरसता की अवधारणा है। उन्होंने जात-पात, लिंग, धर्म और सामाजिक स्थिति के आधार पर होने वाले भेदभाव को न केवल चुनौती दी, बल्कि उसे जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया। उनकी लंगर परंपरा इसका जीवंत प्रमाण है। लंगर केवल भोजन वितरण नहीं था, अपितु एक सामाजिक क्रांति था, जहाँ राजा और रंक, ब्राह्मण और शूद्र, हिंदू और मुस्लिम एकसाथ बैठकर भोजन करते थे। यह प्रथा उस समय की सामंती और वर्ण-आधारित व्यवस्था के लिए, एक सशक्त चुनौती थी। आज, जब हम सामाजिक समावेशन और समानता की बात करते हैं, गुरु नानक का लंगर एक शाश्वत प्रेरणा है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची समानता तभी संभव है, जब हम अपने विशेषाधिकारों को त्यागकर मानवता के धरातल पर एक-दूसरे से जुड़ें।

गुरु नानक की पर्यावरणीय दृष्टि उनकी दूरदर्शिता का एक अनुपम रत्न है। उन्होंने प्रकृति को ईश्वर का अविभाज्य अंग माना, जैसा कि उनके कथन "पवन गुरु, पानी पिता, माता धरति महत" से स्पष्ट होता है। यह उद्घोषणा प्रकृति को मात्र संसाधन नहीं, बल्कि हमारी आध्यात्मिक और शारीरिक सत्ता का मूलाधार मानती है। उस युग में, जब पर्यावरणीय संकट जैसी अवधारणा का अस्तित्व भी नहीं था, गुरु नानक ने प्रकृति के प्रति श्रद्धा और संतुलन की वकालत की। वे मानव और प्रकृति के परस्पर निर्भर रिश्ते को गहराई से समझते थे। आज, जब जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण जैसी वैश्विक चुनौतियाँ हमें घेर रही हैं, उनकी यह दृष्टि हमें स्थायी जीवनशैली और पर्यावरणीय नैतिकता की ओर प्रेरित करती है। यह आधुनिक 'सस्टेनेबल लिविंग' के सिद्धांतों से पूर्णतः मेल खाती है।

गुरु नानक की उदासियाँ, उनकी आध्यात्मिक यात्राएँ, उनकी वैश्विक दृष्टि का एक जीवंत प्रमाण हैं। भारत से लेकर मध्य एशिया, अरब, श्रीलंका और तिब्बत तक की उनकी यात्राएँ केवल धार्मिक प्रचार तक सीमित नहीं थीं, बल्कि विविध संस्कृतियों, धर्मों और समुदायों के बीच संवाद का सेतु रचने का प्रयास थीं। हिंदू पंडितों, मुस्लिम सूफियों, बौद्ध भिक्षुओं और जैन मुनियों के साथ उनके गहन विचार-विमर्श इस बात के साक्षी हैं कि सत्य किसी एक धर्म या परंपरा का बंधक नहीं। उनका यह विश्वास कि "सब में एक ज्योति है" आज के ध्रुवीकृत विश्व में एकजुटता का संदेश देता है। जब सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजन विश्व को खंडित कर रहे हैं, गुरु नानक का यह दर्शन हमें सौहार्द और समावेशिता की ओर प्रेरित करता है।

गुरु नानक का आर्थिक दृष्टिकोण भी उनकी क्रांतिकारी सोच का एक अनछुआ आयाम है। उन्होंने 'किरत करनी', ईमानदार श्रम को ईश्वर की सच्ची भक्ति का आधार माना। उस युग में, जब श्रम को निम्न वर्गों से जोड़कर तुच्छ समझा जाता था, गुरु नानक ने इसे सम्मान का दर्जा दिया। यह विचार सामंती व्यवस्था के लिए एक सशक्त चुनौती था। साथ ही, उनके 'वंड छकना' सिद्धांत ने धन के संचय को नहीं, बल्कि उसके साझाकरण को सच्ची समृद्धि बताया। यह शिक्षाएँ आज के उपभोक्तावादी समाज के लिए एक गहन सबक हैं, जहाँ संसाधनों का असमान वितरण सामाजिक असंतुलन को जन्म दे रहा है। उनकी यह दृष्टि आधुनिक सामाजिक-आर्थिक नीतियों, जैसे सामाजिक कल्याण और समावेशी विकास, के साथ गहराई से जुड़ती हैं।

गुरु नानक का दृष्टिकोण समस्त सृष्टि के प्रति असीम करुणा और अहिंसा का एक प्रदीप्त प्रतीक था। उन्होंने न केवल मानव, बल्कि पशु-पक्षी और प्रकृति के प्रत्येक तत्व में ईश्वर की सर्वव्यापी चेतना को दृष्टिगत किया। उनकी शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि हिंसा केवल शारीरिक तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक रूपों में भी प्रकट होती है। आज, जब हम पशु अधिकारों, नैतिक उपभोग और पर्यावरण संरक्षण जैसे वैश्विक सरोकारों पर विमर्श करते हैं, गुरु नानक का यह दर्शन हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन में करुणा, संवेदनशीलता और सहजीवन की भावना को आत्मसात करें। उनकी यह दूरदर्शी दृष्टि आधुनिक युग के लिए एक अमर संदेश है, जो हमें सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, सम्मान और एकता के पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित करती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

राहुल के निशाने पर सरकार या विपक्ष?

अनिल धर्मदेश

2024 के आम चुनाव से पहले खुद इंडिया ब्लॉक ने राहुल गांधी को गठबंधन का नेता मानने से इनकार कर दिया था। ममता और केजरीवाल का विरोध देख कांग्रेस बैकफुट पर थी।ऐन चुनाव के वक्त किसी फजीहत से बचने के लिए पार्टी ने किसी प्रकार मल्लिकार्जुन खड़गे को गठबंधन का अध्यक्ष बनवा लिया था।राहुल चाहे विपक्ष से पीएम कैंडिडेट नहीं बन सके पर खड़गे के अध्यक्ष चुने जाने से कांग्रेस की बड़े भाई वाली भूमिका किसी प्रकार सुनिश्चित हो सकी और यहीं से शुरू हुई राहुल को देश का नेता नंबर दो यानी विपक्ष का नेता नंबर एक बनाने की कवायद। आज कांग्रेस के थिंकटैंक की दृष्टि स्पष्ट है कि केंद्र से लेकर राज्यों तक मोदी का अगर कोई प्रतिद्वंद्वी हो तो वह सिर्फ और सिर्फ राहुल गांधी हों।2024 के आम चुनाव और उसके बाद पांच राज्यों के चुनावों के नतीजों पर कांग्रेस के आंतरिक मंथन से यही निकलकर आया कि राज्यों में पार्टी की पकड़ बहुत कमजोर हो चुकी है, विशेषकर उन राज्यों में, जहाँ कोई तीसरा दल मजबूत है। यूपी, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र से लेकर दिल्ली, पंजाब और बंगाल तक कांग्रेस पार्टी को भाजपा से अधिक नुकसान स्थानीय दल पहुंचा रहे हैं।कमजोर संगठन और बड़े चेहरे के अभाव के कारण चुनावों में क्षेत्रीय दलों के साथ आपसी खींचतान के बावजूद कांग्रेस को बहुत कम सीटें दी जाती हैं। इतनी कम कि वह राज्य में उसके गठबंधन की सरकार बन जाने पर भी पार्टी किसी परजीवी से अधिक नहीं दिखाई पड़ती। खस्ताहाल संगठन के भरोसे अकेले चुनाव लड़ना फिलवक्त कांग्रेस के बस का काम नहीं है। कांग्रेस के लिए गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य ज्यादा अच्छे हैं, जहाँ बुरी तरह चुनाव हार जाने पर भी वह भाजपा का अकेला विकल्प बनी रहती है।

तीसरी शक्ति की उपस्थिति वाले राज्यों में कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व स्थापित करने के लिए ही पिछले दो-तीन वर्षों से लगातार राहुल गांधी कोई न कोई नया मुद्दा उठाकर राष्ट्रीय चर्चाओं के केंद्र में हैं फिर चाहे वह चीन द्वारा भारत की जमीन हड़पने का आरोप हो या अमेरिका में ही प्रतिबंधित कर दी गयी वित्तीय सलाहकार कंपनी हिन्डनबर्ग की रिपोर्ट, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान और बाद में सरकार और सेना पर उंगली उठाना हो या अब वोट चोरी का मुद्दा। राहुल के ये हमले प्रथम दृष्टया तो केंद्र सरकार पर हैं मगर इनके गर्भ में भाजपा विरोधी विचारधारा के मध्य उनकी राष्ट्रीय लोकप्रियता को शीर्ष तक पहुंचाना ही असल मकसद है। संक्षेप में कहें तो निशाने पर कोई और दिख रहा है जबकि निशाना है कहीं और ही।

राहुल गांधी को राष्ट्रीय स्तर पर मोदी से मोर्चा लेने में सक्षम दिखाने के प्रयास 2018 से ही प्रारंभ हो चुके थे। संसद में कठोर बयानबाजी के शुरुआती प्रयास को सरकार ने अपनी साख-रक्षा में चौतरफा हमले से कमजोर कर दिया। उल्टा सुप्रीम कोर्ट में माफी मांगकर पार्टी की किरकिरी ही हो गयी। इसके बाद पैदल यात्राओं का प्रयोग हुआ पर इसमें अत्यधिक समय और श्रम खर्चने के बाद भी अल्पसंख्यक समाज के बीच राहुल की वह छाप स्थापित नहीं हो सकी जिसकी अपेक्षा की जा रही थी।ऐसे में आगामी बिहार चुनावों से पहले कांग्रेस मीडिया की सुर्खियों के माध्यम से विपक्षी वोटों के खेमे में राहुल की लोकप्रियता को इस हद तक गहरा करना चाह रही है कि कांग्रेस अपने दम पर 30-35% तक वोट प्राप्त कर सके।कम से कम 25 फीसद तो हो ही। प्रयास यह है कि कांग्रेस का पुराना वोटर यानी मुस्लिम समुदाय राज्यों के चुनाव में भी पार्टी के साथ आए। कुछ दशकों से विधानसभा चुनावों में यह वोटर क्षेत्रीय दलों के साथ चला जाता है।यही कारण है कि क्षेत्रीय दल राज्यों के चुनाव में कांग्रेस को ज्यादा तरजीह नहीं देते।

यह विपक्षी वोटबैंक में सेंध लगाने की कांग्रेस पार्टी की महत्वाकांक्षा ही है जिसके कारण सभी गैर एनडीए दल मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए लगातार गैर लोकतांत्रिक प्रयोग कर रहे हैं। जानकारों का मानना है कि 2024 चुनावों के बाद इस्लामिक ऑर्गनाइजेशन भी पसोपेश में है। केंद्र में कांग्रेस के बेहतर प्रदर्शन के बाद राज्यों के चुनाव में किसे समर्थन दिया जाए, इसे लेकर निश्चत रूप से असमंजस है जबकि दिल्ली चुनावों में कांग्रेस ने आआपा की हार सुनिश्चित कराकर विपक्षी वोटबैंक लॉबी को अपनी ताकत का अहसास भी करा ही दिया है।यही कारण है कि बिहार में आरजेडी हो या यूपी में सपा, दोनों ही पार्टियाँ कांग्रेस के निर्णय को लेकर सतर्क भी हैं और राहुल गांधी के साथ सहयोगी भी। लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी के कार्यक्रम निरस्त करने वाले विपक्षी दल आज कांग्रेस पार्टी के कैम्पेन में खुद सहयोगी बनकर खड़े हैं।

22 सितम्बर जयन्ती पर विशेष : महान राजा और समाज सुधारक थे महाराजा अग्रसेन

रमेश सर्राफ धमोरा

महान राजा और समाज सुधारक महाराजा अग्रसेन की जयंती के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष अग्रसेन जयंती मनाई जाती है। जिन्होंने अग्रवाल समुदाय की स्थापना की और समाज के लिए समानता, सामाजिक कल्याण, और भाईचारे के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया। इस दिन को उनके विचारों और आदर्शों के प्रति समर्पण दर्शाने और सामुदायिक सेवा गतिविधियों के माध्यम से उनके संदेश को फैलाने के लिए मनाया जाता है। महाराजा अग्रसेन का जन्म अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को महाराजा वल्लभ सेन के घर हुआ था। जिसे दुनिया भर में अग्रसेन जयंती के रूप में मनाया जाता है। राजा वल्लभ के अग्रसेन और शूरसेन नामक दो पुत्र हुये थे। अग्रसेन महाराज वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र थे। महाराजा अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराज वल्लभ से कहा था कि यह बालक बहुत बड़ा राजा बनेगा। इस के राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों वर्ष बाद भी इनका नाम अमर होगा। उनके राज में कोई दुखी या लाचार नहीं था। बचपन से ही वे अपनी प्रजा में बहुत लोकप्रिय थे।

महाराजा अग्रसेन ने शासन प्रणाली में एक नयी व्यवस्था को जन्म दिया था। उन्होंने वैदिक सनातन आर्य सस्कृंति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य में कृषि-व्यापार, उद्योग, गौपालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना की थी। महाराजा अग्रसेन एक कर्मयोगी थे जिन्होंने सभी के लिए समृद्धि की कामना की। उन्होंने अहिंसा का आदर्श अपनायाजिसमें उन्हें पशु बलि की निरर्थकता का एहसास हुआ। इस अहसास ने उन्हें 'अहिंसा' के सशक्त नायकों में से एक बना दिया।उन्होंने सभी जानवरों की बलि पर प्रतिबंध लगा दिया। हालाँकि अहिंसा में उनके विश्वास का मतलब उत्पीड़न का विरोध न करना नहीं था बल्कि उन्होंने आत्मरक्षा को बढ़ावा दिया। उनके अनुसार आत्मरक्षा और राष्ट्ररक्षा केवल क्षत्रियों - योद्धा जाति का कार्य नहीं है बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की रक्षा करे।

महाराजा अग्रसेन भगवान राम के वंशज और भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन थे। वे राजा राम के पुत्र कुश की 34वीं पीढ़ी की संतान थे।महाराजा अग्रसेन को अहिंसा के प्रतीक, शांति के दूत के रूप में जाना जाताहै।महाराजा अग्रसेन त्याग, करुणा, अहिंसा, शांति, समृद्धि के अवतार और एक सच्चे समाजवादी थे।महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का अग्रदूत कहा जाता है। अपने क्षेत्र में सच्चे समाजवाद की स्थापना हेतु उन्होंने नियम बनाया था कि उनके नगर में बाहर से आकर बसने वाले प्रत्येक परिवार की सहायता के लिए नगर का प्रत्येक परिवार उसे एक सिक्का व एक ईंट देगा। जिससे आने वाला परिवार स्वयं के लिए मकान व व्यापार का प्रबंध कर सके। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की छोटी-छोटी मदद से समान समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त किया जा सकता है।

महाराजा अग्रसेन एक सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा थे। जिन्होंने प्रजा की भलाई के लिए वणिक धर्म अपना लिया था। महाराज अग्रसेन ने नाग लोक के राजा कुमद के यहां आयोजित स्वंयवर में राजकुमारी माधवी का वरण किया। इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया गठबंधन हुआ। माता लक्ष्मी की कृपा से श्री अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। राजकुमार विभु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया।

"महाराजा अग्रसेन: अग्रवाल समाज के जनक और उनके महत्वपूर्ण इतिहास का अध्ययन"

माना जाता है कि यज्ञों में बैठे 18 गुरुओं के नाम पर ही अग्रवंश की स्थापना हुई। ऋषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ उनके द्वारा बसायी 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया।एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी अग्रवाल समाज में प्रचलित है।

महाराजा वल्लभ के निधन के बाद अपने नये राज्य की स्थापना के लिए महाराज अग्रसेन ने अपनी रानी माधवी के साथ सारे भारतवर्ष का भ्रमण किया। इसी दौरान उन्हें एक जगह शेर तथा भेडिये के बच्चे एक साथ खेलते मिले। उन्हें लगा कि यह दैवीय संदेश है जो इस वीरभूमि पर उन्हें राज्य स्थापित करने का संकेत दे रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे अग्रोहा नाम से जाना जाता है। वह जगह आज के हरियाणा के हिसार के पास हैं। आज भी यह स्थान अग्रहरि और अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ के समान है। यहां महाराज अग्रसेन और मां लक्ष्मी देवी का भव्य मंदिर है।

उन्होंने परिश्रम और उद्योग से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर वैश्य जाति को व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर आत्म-रक्षा के लिए शस्त्रों के उपयोग की शिक्षा पर भी बल दिया। उस समय यज्ञ करना समृद्धि, वैभव और खुशहाली की निशानी माना जाता था। महाराज अग्रसेन ने बहुत सारे यज्ञ किए। महाराज अग्रसेन ने 108 वर्षों तक राज किया। महाराज अग्रसेन ने एक ओर हिन्दू धर्म ग्रंथों में वैश्य वर्ण के लिए निर्देशित कर्म क्षेत्र को स्वीकार किया और नए आदर्श स्थापित किए। उनके जीवन के मूल रूप से तीन आदर्श हैं- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, आर्थिक समरूपता एवं सामाजिक समानता।

महाराजा अग्रसेन पर अनगिनत पुस्तके लिखी जा चुकी हैं। सुप्रसिद्ध लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र जो खुद भी अग्रवाल समुदाय से थे। उन्होने 1871 में अग्रवालों की उत्पत्ति नामक एक प्रामाणिक ग्रंथ लिखा है। जिसमें विस्तार से इनके बारे में बताया गया है। 24 सितंबर 1976 में भारत सरकार द्वारा 25 पैसे का डाक टिकट महाराजा अग्रसेन के नाम पर जारी किया गया था। सन 1995 में भारत सरकार ने दक्षिण कोरिया से 350 करोड़ रूपये में एक विशेष तेल वाहक पोत (जहाज) खरीदा जिसका नाम महाराजा अग्रसेन रखा गया। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 का आधिकारिक नाम महाराजा अग्रसेन पर है।

आज का अग्रोहा ही प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित अग्रवालों का उद्गम स्थान आग्रेय है। अग्रोहा हिसार से 20 किलोमीटर दूर महाराजा अग्रसेन राष्ट्र मार्ग संख्या 10 के किनारे एक साधारण गांव के रूप में स्थित है। जहां पांच सौ परिवारों की आबादी रहती है। इसके समीप ही प्राचीन राजधानी अग्रेह (अग्रोहा) के अवशेष के रूप में 650 एकड भूमि में फैला महाराजा अग्रसेन धाम हैं। जो महाराज अग्रसेन के अग्रोहा नगर के गौरव पूर्ण इतिहास को दर्शाता हैं। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज में पांचवे धाम के रूप में पूजा जाता है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने यहां पर बहुत सुंदर मन्दिर, धर्मशालाएं आदि बनाकर यहां आने वाले अग्रवाल समाज के लोगो के लिए बहुत सुविधायें उपलब्ध करवायी है। इतिहास में महाराज अग्रसेन परम प्रतापी, धार्मिक, सहिष्णु, समाजवाद के प्रेरक महापुरुष के रूप में उल्लेखित हैं। देश में जगह-जगह महाराजा अग्रसेन के नाम पर बनायी गयी स्कूल, अस्पताल, बावड़ी, धर्मशालाएं आदि महाराजा अग्रसेन के जीवन मूल्यों का आधार हैं। जो मानव आस्था के प्रतीक हैं।

पांच हजार वर्ष पहले महाराज अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित समानता, समाजवाद और अहिंसा के विचार भारत के वर्तमान संविधान की भावना हैं। लेकिन हम भारतीय इन आदर्शों को अपने जीवन में नहीं उतार पाए हैं। वे हमारे संविधान में केवल शब्द बनकर रह गए हैं। अब यह हम पर निर्भर है कि हम अपने पूर्वज को श्रद्धांजलि के रूप में इन आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं। महाराजा अग्रसेन जी ने हमें व्यापार और आर्थिक विकास के सिद्धांत दिए थे। वहीं वैदिक धर्म, संस्कृति और आदर्शों का पालन करते हुए समाज के सभी वर्ग के लोगों की उन्नति के लिए समान अवसरों के निर्माण पर भी उन्होंने जोर दिया था।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

22 सितंबर: विश्व गैंडा दिवस] धरती का प्रहरी: गैंडे के अस्तित्व की आखिरी पुकार

सदियों से धरती पर अपनी शांत किंतु प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराने वाला गैंडा आज अपने अस्तित्व के लिए निर्णायक संघर्ष कर रहा है। विश्व गैंडा दिवस केवल इस संकटग्रस्त प्रजाति को बचाने का आह्वान नहीं, बल्कि उस प्राचीन परंपरा को संजोने का अवसर भी है, जो प्रकृति और मानव के सहअस्तित्व व सामंजस्य का प्रतीक रही है। गैंडे का विशाल, दृढ़ शरीर और शांत स्वभाव हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति विनम्रता और संतुलन में निहित होती है। किंतु आज, उनकी कहानी जंगलों की सीमाओं से आगे बढ़कर मानव समाज की नैतिकता, लालच और भविष्य के प्रति जवाबदेही तक पहुंच चुकी है। यह दिन हमें आत्मचिंतन का अवसर देता हैः क्या हम वास्तव में उस धरती की रक्षा कर पा रहे हैं, जहां गैंडे जैसे प्राणी लाखों वर्षों से विचरण करते आए हैं?

गैंडे का महत्व केवल उनकी भौतिक उपस्थिति तक सीमित नहीं। वे पारिस्थितिकी तंत्र के अपरिहार्य कर्णधार हैं। अफ्रीका के सवाना घास के मैदानों से लेकर भारत और नेपाल के दलदली जंगलों तक, गैंडे अपने भोजन और विचरण से पर्यावरण को संतुलित रखते हैं। उनकी चराई से घास के मैदानों में नई वनस्पति को पनपने का अवसर मिलता है, जो छोटे जीवों और पक्षियों के लिए आश्रय व भोजन का स्रोत बनता है। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में सफेद गैंडे की चराई से घास के छोटे-छोटे टुकड़े बनते हैं, जो छोटे स्तनधारियों और कीटों के लिए जीवनदायी हैं। इसी तरह, भारत के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में एक-सींग वाला गैंडा दलदली क्षेत्रों में जल के गड्ढे बनाता है, जो बरसात में अन्य प्रजातियों के लिए जल स्रोत बनते हैं। गैंडा महज एक प्राणी नहीं, बल्कि एक पारिस्थितिक इंजीनियर है, जो प्रकृति के जटिल ताने-बाने को सुदृढ़ करता है।

गैंडे की कहानी इतिहास और संस्कृति में भी गहरे रची-बसी है। प्राचीन भारत में इसे शक्ति और स्थायित्व का प्रतीक माना जाता था। अजंता-एलोरा की चित्रकारी से लेकर अफ्रीकी लोककथाओं तक, गैंडा मानव कल्पना को निरंतर प्रेरित करता रहा है। 1515 में पुर्तगाली नाविकों द्वारा यूरोप लाए गए गैंडे से प्रेरित अल्ब्रेक्ट ड्यूरर का चित्र, जो बिना गैंडे को देखे बनाया गया, सदियों तक यूरोप में गैंडे की छवि बना रहा। यह घटना दर्शाती है कि गैंडा केवल एक जीव नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की कला, कहानियों और संस्कृति का अभिन्न अंग है। आज भी, कई अफ्रीकी जनजातियाँ गैंडे को पृथ्वी का रक्षक मानती हैं, जो हमें प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी की स्मृति दिलाता है।

गैंडे का सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व अतुलनीय है, फिर भी इसका भविष्य आज गहरे संकट में है। अवैध शिकार और सींग की बेतुकी मांग ने इस प्रजाति को विलुप्ति के कगार पर धकेल दिया है। गैंडे का सींग—महज केराटिन से बना, जैसा हमारे नाखून और बाल—एशिया के कुछ हिस्सों में औषधीय गुणों का भ्रामक प्रतीक बना हुआ है, जबकि वैज्ञानिक रूप से इसका कोई आधार नहीं। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, 2010 से 2020 के बीच अफ्रीका में करीब 10,000 गैंडे अवैध शिकार का शिकार बने। दक्षिण अफ्रीका, जो विश्व के 80% गैंडों का घर है, वहाँ 2024 में ही 500 से अधिक गैंडों को मार डाला गया। ये आँकड़े केवल एक प्रजाति की त्रासदी नहीं, बल्कि मानव लालच और अंधविश्वास की भयावह सच्चाई उजागर करते हैं। काले बाजार में एक किलोग्राम गैंडे के सींग की कीमत 60,000 डॉलर तक पहुँचती है—सोने से भी महँगा। यह क्रूर विडंबना है कि जिस प्राणी ने लाखों वर्षों तक प्रकृति के साथ सामंजस्य कायम रखा, वह आज मानव मूर्खता का शिकार हो रहा है।

विश्व गैंडा दिवस केवल एक प्रतीकात्मक उत्सव नहीं, बल्कि एक सशक्त जागृति का आह्वान है। यह हमें हमारी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने को बाध्य करता है। गैंडों की रक्षा के लिए कठोर कानून और संरक्षण क्षेत्र पर्याप्त नहीं; हमें सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता है। एशिया में गैंडे के सींग की मांग को कम करने के लिए वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं। साथ ही, स्थानीय समुदायों को संरक्षण का हिस्सा बनाना अनिवार्य है। भारत के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में स्थानीय लोगों को गाइड और संरक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया गया, जिससे गैंडों की सुरक्षा तो बढ़ी ही, स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सशक्त हुई। नामीबिया का ₹कम्युनिटी कंजर्वेंसीज₹ मॉडल इसका एक और प्रेरक उदाहरण है, जहाँ स्थानीय लोग गैंडों की रक्षा में सक्रिय भागीदार हैं और पर्यटन से होने वाली आय का हिस्सा पाते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल गैंडों को बचाता है, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच एक नए, सार्थक रिश्ते की नींव रखता है।

गैंडे का महत्व केवल उनकी भौतिक उपस्थिति तक सीमित नहीं। वे पारिस्थितिक तंत्र के अपरिहार्य कर्णधार हैं। अफ्रीका के सवाना घास के मैदानों से लेकर भारत और नेपाल के दलदली जंगलों तक, गैंडे अपने भोजन और विचरण से पर्यावरण को संतुलित रखते हैं। उनकी चराई से घास के मैदानों में नई वनस्पति को पनपने का अवसर मिलता है, जो छोटे जीवों और पक्षियों के लिए आश्रय व भोजन का स्रोत बनता है। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में सफेद गैंडे की चराई से घास के छोटे-छोटे टुकड़े बनते हैं, जो छोटे स्तनधारियों और कीटों के लिए जीवनदायी हैं।

गैंडे की विविध प्रजातियाँ हमें प्रेरणा और चेतावनी दोनों देती हैं। भारत और नेपाल का एक-सींग वाला गैंडा, जो 1970 के दशक में मात्र 600 की संख्या में सिमट गया था, आज संरक्षण की दृढ़ इच्छाशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बल पर 4,000 के करीब पहुँच चुका है—एक जीवंत सफलता की मिसाल। लेकिन सुमात्रा और जावा के गैंडे आज भी विलुप्ति के कगार पर हैं। सुमात्रन गैंडों की संख्या अब 50 से भी कम है, और जावन गैंडा केवल इंडोनेशिया के उजुंग कुलोन राष्ट्रीय उद्यान में 70-80 की तादाद में बमुश्किल जीवित है। ड्रोन, सैटेलाइट ट्रैकिंग और डीएनए विश्लेषण जैसी आधुनिक तकनीकें इन प्रजातियों को बचाने की उम्मीद जगाती हैं, मगर यह तभी संभव है जब अंतरराष्ट्रीय सहयोग और कठोर कानून उनका साथ दें।

गैंडे का संकट केवल उनकी प्रजाति तक सीमित नहीं; यह समूची मानवता के लिए एक सशक्त चेतावनी है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और अवैध व्यापार न केवल गैंडों को, बल्कि पूरी जैव विविधता को नष्ट कर रहे हैं। गैंडों की अनुपस्थिति पारिस्थितिक संतुलन को भंग करेगी, जिसका असर मानव जीवन पर भी पड़ेगा। उदाहरण के लिए, गैंडों द्वारा बनाए गए जल स्रोतों के नष्ट होने से स्थानीय जलवायु प्रभावित हो सकती है, जिससे कृषि और आजीविका पर संकट गहराएगा।

विश्व गैंडा दिवस हमें यह सिखाता है कि प्रकृति की रक्षा केवल वैज्ञानिकों या संरक्षणवादियों का दायित्व नहीं, बल्कि हमारी साझा जिम्मेदारी है। स्कूलों में बच्चों को गैंडों की कहानियाँ सुनाने के साथ-साथ उनकी पारिस्थितिक भूमिका और संकटों को समझाना होगा। हमें ऐसी नीतियों का समर्थन करना होगा जो अवैध शिकार को रोकें और स्थानीय समुदायों को सशक्त करें। साथ ही, हमें अपनी उपभोग की आदतों पर सवाल उठाने होंगे, क्योंकि हमारी मांगें ही अक्सर प्रकृति के विनाश का कारण बनती हैं।

गैंडा महज एक प्राणी नहीं, बल्कि उस धरती का प्रतीक है जो हमें जीवन देती है। उसका हर कदम, हर साँस हमें याद दिलाता है कि हम प्रकृति के हिस्से हैं, न कि उसके स्वामी। विश्व गैंडा दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक प्रेरक आह्वान है—एक ऐसी दुनिया के निर्माण का, जहाँ गैंडे जैसे प्राणी न केवल जीवित रहें, बल्कि अपनी पूर्ण गरिमा और स्वतंत्रता के साथ फलें-फूलें। यदि हम गैंडे को बचा पाए, तो हम अपनी संवेदनशीलता, करुणा और भविष्य को भी बचा लेंगे। यह लड़ाई केवल जंगलों की नहीं, बल्कि हमारी आत्मा और मानवता की है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

किसानों को प्रोत्साहन व्यवहार्य विकल्प

विजय गर्ग

निस्संदेह, इन राज्यों में किसान अब एक प्रभावशाली वोट बैंक बन चुके हैं। खासकर पंजाब में किसानों की जागरूकता सत्ताधीशों पर दबाव बनाने में कामयाब हो जाती है। सर्वविदित है कि देश के सीमावर्ती राज्य पंजाब में हाल ही में आई बाढ़ के दौरान धान की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है।

निर्विवाद रूप से पर्यावरण प्रदूषण देश के सामने एक बड़ा संकट है। लाखों लोगों के जीवन पर इससे संकट के बादल मंडराते हैं। शीत ऋतु की दस्तक के साथ राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण की काली छाया के बीच अक्सर इस संकट के मूल में निकटवर्ती राज्यों में पराली जलाने की घटनाओं को जिम्मेदार बताने की कवायद हर साल होती है। इस बार भी पंजाब में धान की खरीद शुरू होने के बाद विभिन्न हितधारकों का ध्यान एक मौसमी समस्या पराली जलाने की ओर आकर्षित हुआ है। सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकार से उस कुप्रथा में लिप्त कुछ किसानों को गिरफ्तार करने के बारे में निर्णय लेने को कहा है, जिसे हर साल अक्तूबर-नवंबर में वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारण बताया जाता है। वैसे न्यायालय ने इस बात को स्वीकार किया है कि 'हमारे लिये किसान विशेष हैं और हम उनकी बदौलत ही भोजन प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही अपनी खाद्य श्रृंखला को मजबूत कर रहे हैं।' लेकिन वहीं दूसरी ओर शीर्ष अदालत ने राज्य से पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में कड़ा संदेश देने के लिये दंडात्मक प्रावधान लागू करने का भी आग्रह किया है। निर्विवाद रूप से देश में पंजाब और हरियाणा, जो कि खाद्यान्न उत्पादन में अग्रणी राज्य भी हैं, पराली जलाने से रोकने के लिये विगत में कभी-कभी किसानों को जेल में भी डालते रहे हैं। लेकिन एक हकीकत यह भी है कि यह कठोर कदम व्यावहारिक धरातल में एक प्रभावी निवारक साबित नहीं हो सका है। हमें इस बात की भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि पिछले कुछ वर्षों में हुई गिरफ्तारियों और भारी जुर्माने ने इस क्षेत्र के कृषक समुदाय के गुस्से को भड़काया ही है। जिसने केंद्र और राज्य सरकारों के खिलाफ आवाज उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। वैसे एक हकीकत यह भी है कि सत्ताधीशों के लिये किसानों पर आपराधिक मुकदमा चलाना राजनीतिक दृष्टि से एक जोखिम भरा कदम माना जाता है।

निस्संदेह, इन राज्यों में किसान अब एक प्रभावशाली वोट बैंक बन चुके हैं। खासकर पंजाब में किसानों की जागरूकता सत्ताधीशों पर दबाव बनाने में कामयाब हो जाती है। सर्वविदित है कि देश के सीमावर्ती राज्य पंजाब में हाल ही में आई बाढ़ के दौरान धान की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। ऐसे में किसानों के खिलाफ कोई सख्त कदम उठाना संवेदनशीलता की दृष्टि से उचित भी नहीं कहा जा सकता है। इसलिए अधिकारी किसी संभावित आक्रोश से बचने के लिये दंडात्मक कार्रवाई से बचने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसे में वे कोई सुरक्षित रुख अपना सकते हैं। निस्संदेह, किसी ऐसी सख्त कार्रवाई से पहले ही प्राकृतिक आपदा की मार झेल रहे किसानों की स्थिति और बिगड़ सकती है। ऐसे हालात में किसानों से टकराव की बजाय सहयोग को प्राथमिकता बनाना तार्किक कहा जा सकता है। आर्थिक विकल्प, दंड से बेहतर काम करेगा। दूसरी ओर किसानों को पराली के प्रबंधन के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। हम उन्हें सशक्त बनाकर इस संकट का तार्किक समाधान निकाल सकते हैं। सरकार प्रयास करे कि पराली का उपयोग उद्योगों द्वारा जैव ईंधन के रूप में एक उत्पादक विकल्प के तरह किया जाए। हमारे देश के ऊर्जा उत्पादन में बायोमास के उपयोग को बढ़ावा देने से जमीनी स्तर पर बदलाव लाया जा सकता है। पराली आधारित बॉयलरों को अपनाने वाले उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिये पूंजीगत सब्सिडी सराहनीय पहल बन सकती है। सर्दियों में भीषण ठंड से बचने के लिये पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ किसानों की भलाई सुनिश्चित करने वाले पर्यावरण अनुकूल कदम उठाना भी जरूरी है। साथ ही पराली का निस्तारण करने वाली मशीनों की खरीद के लिये किसानों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। मशीनों की खरीद में सब्सिडी तथा ग्राम पंचायत स्तर पर सहकारिता के आधार पर इनके उपयोग से भी सार्थक परिणाम मिल सकते हैं। इस दिशा में किसानों को जागरूक करने के लिये अभियान चलाए जाने जरूरी हैं। उन्हें बताया जाना चाहिए कि खेत में पराली जलाने से जहां खेतों की उर्वरता पर प्रतिकूल असर पड़ता है, वहीं इससे उठने वाला धुआं उनके व परिवार के लिये भी घातक है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कैसे एक छोटे मस्तिष्क क्षेत्र उदारता गाइड

उदारता- चाहे भोजन साझा करना, धन दान करना, या किसी अजनबी की मदद करना - एक नैतिक या सांस्कृतिक विकल्प की तरह महसूस कर सकता है, लेकिन तंत्रिका विज्ञान से पता चलता है कि जीव विज्ञान का इसमें एक शक्तिशाली कहना है।

तंत्रिका हॉटस्पॉट: सबजेनुअल पूर्वकाल सिंगुलेट कॉर्टेक्स

ललाट पालि के भीतर गहरी एक छोटा सा क्षेत्र है जिसे सबजेनुअल पूर्वकाल सिंगुलेट कॉर्टेक्स (एसजीऐसीसी) कहा जाता है।

इस क्षेत्र को सामाजिक संबंध, सहानुभूति और सामाजिक व्यवहार से जोड़ा गया है।

ब्रेन इमेजिंग अध्ययनों से पता चलता है कि एसजीऐसीसी तब अधिक सक्रिय हो जाता है जब लोग अपने लिए पुरस्कार रखने के बजाय दूसरों को देना चुनते हैं।

यह काम किस प्रकार करता है

1.।इनाम प्रसंस्करण:

एसजीऐसीसी मस्तिष्क की इनाम प्रणाली से जुड़ता है, जिसमें वेंट्रल स्ट्रिएटम भी शामिल है।

जब आप कुछ दूर देते हैं, तो यह सर्किटरी एक ₹गर्म चमक₹ प्रभाव पैदा कर सकती है - खुशी की भावना जो उदारता को मजबूत करती है।

2.।सामाजिक मूल्य कोडिंग:

एसजीऐसीसी सिर्फ आपके स्वयं के पुरस्कारों को ट्रैक नहीं करता है - यह दूसरों को लाभ भी देता है।

इसका मतलब है कि आपका मस्तिष्क "मेरे लिए क्या अच्छा है" का वजन कर सकता है, "उनके लिए क्या अच्छा है."

3।निर्णय लेने का प्रभाव:

मिग्डाला और प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स जैसे क्षेत्रों से सहानुभूति संकेतों को एकीकृत करके, एसजीऐसीसी दयालुता और निष्पक्षता की ओर झुकाव विकल्पों में मदद करता है, विशेष रूप से सहकारी स्थितियों में।

अनुसंधान से साक्ष्य

लेसियन अध्ययन: एसजीऐसीसी को नुकसान पहुंचाने वाले लोग अक्सर कम परोपकारी व्यवहार दिखाते हैं।

एफ एम आर आई अध्ययन: मजबूत एसजीऐसीसी सक्रियण दान करने के लिए दान करने की उच्च संभावना की भविष्यवाणी करता है।

बाल विकास: बच्चों में भी, एसजीऐसीसी गतिविधि व्यवहार साझा करने से संबंधित है, यह सुझाव देते हुए कि उदारता की प्रारंभिक जैविक जड़ें हैं।

व्हाई इट मैटर्स

इस छोटे मस्तिष्क हब को समझने पर प्रकाश डालता है:

मानसिक स्वास्थ्य: अवसाद जैसे विकार (जहां एसजीऐसीसी गतिविधि बदल जाती है) कनेक्ट करने और देने की प्रेरणा को कम कर सकता है।

सामाजिक सामंजस्य: समूहों में सहकारी रूप से रहने की हमारी क्षमता ऐसे तंत्रिका तंत्र पर निर्भर करती है।

व्यावहारिक उपयोग: एसजीऐसीसी फ़ंक्शन में अंतर्दृष्टि शिक्षा, चिकित्सा और यहां तक कि नीति निर्धारण में सामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए नए तरीकों को प्रेरित कर सकती है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद,

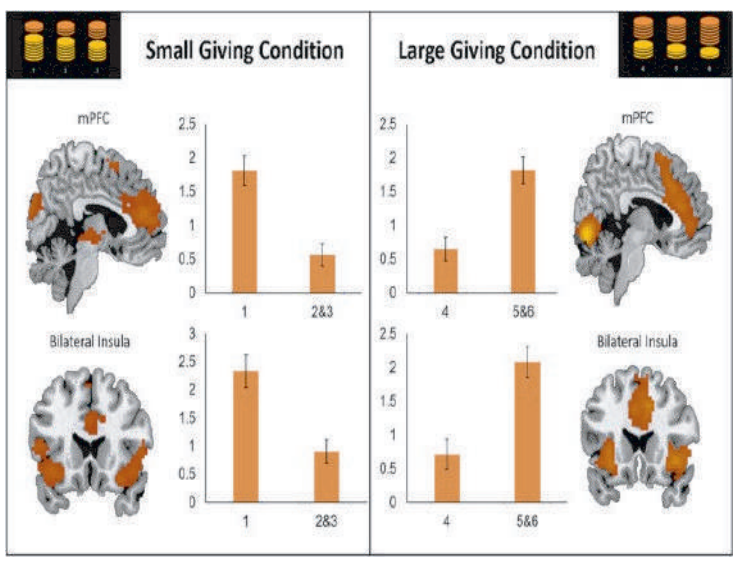

जैविक आयु बनाम कालानुक्रमिक आयु

विजय गर्ग

कालानुक्रमिक आयु केवल उन वर्षों की संख्या है जो आप जन्म से जीवित हैं। यह एक निश्चित, रैखिक उपाय है जो आपके जन्मदिन पर हर साल एक से बढ़ता है। एक ही कालानुक्रमिक युग के सभी लोग ठीक उसी समय तक जीवित रहे हैं। दूसरी ओर, जैविक आयु, आपके शरीर के शारीरिक और कार्यात्मक स्वास्थ्य का एक उपाय है, अनिवार्य रूप से आपकी कोशिकाएं और ऊतक कितने पुराने हैं। यह विभिन्न कारकों से प्रभावित है और आपके कालानुक्रमिक युग से अलग हो सकता है। आपकी जैविक आयु आपके कालानुक्रमिक युग से छोटी या बड़ी हो सकती है, जो आपके स्वास्थ्य की सही स्थिति को दर्शाती है। इसे अपने शरीर की ₹वास्तविक₹ उम्र के रूप में सोचें।

मुख्य अंतर और यह क्यों मायने रखता है

माप: कालानुक्रमिक आयु एक साधारण गणना है। जैविक आयु अधिक जटिल है और अक्सर डीएनए मिथाइलेशन, टेलोमेरे लंबाई और अन्य सेलुलर और शारीरिक संकेतकों जैसे विभिन्न बायोमार्कर के माध्यम से अनुमान लगाया जाता है।

परिवर्तन की दर: कालानुक्रमिक आयु सभी के लिए निरंतर दर से बढ़ती है (प्रति वर्ष एक वर्ष)। जैविक आयु आपकी जीवन शैली और आनुवंशिकी के आधार पर तेज या धीमी दर से बढ़ सकती है।

भविष्य कहनेवाला शक्ति: कालानुक्रमिक युग का उपयोग एक मानक उपाय के रूप में किया जाता है, लेकिन जैविक आयु अक्सर उम्र से संबंधित बीमारियों और समग्र जीवन प्रत्याशा के लिए आपके जोखिम का बेहतर भविष्यवक्ता होता है। उदाहरण के लिए, उनकी कालानुक्रमिक उम्र से अधिक जैविक आयु वाले व्यक्ति को हृदय रोग, मधुमेह या मनोभ्रंश जैसी स्थितियों के विकास का खतरा अधिक हो सकता है। जैविक आयु को प्रभावित करने वाले कारक आपकी जैविक आयु इस बात का प्रतिबिंब है कि आपने समय के साथ अपने शरीर का कितना अच्छा इलाज किया है। कई कारक प्रभावित कर सकते हैं कि आपकी जैविक घड़ी आपके कालानुक्रमिक की तुलना में तेज या धीमी चल रही है या नहीं:

जीवन शैली: आहार, व्यायाम, नींद और तनाव प्रबंधन एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। संतुलित पोषण और नियमित शारीरिक गतिविधि के साथ एक स्वस्थ जीवन शैली जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा कर सकती है। इसके विपरीत, गतिहीन जीवन शैली, अस्वास्थ्यकर आहार और पुराने तनाव जैसी खराब आदतें इसे तेज कर सकती हैं।

आनुवंशिकी: आपके जीन आपको अधिक जल्दी या धीरे-धीरे उम्र के लिए पूर्वनिर्धारित कर सकते हैं। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से अपने आनुवंशिक मेकअप के कारण उम्र बढ़ने के लिए अधिक लचीला होते हैं।

पर्यावरण: पर्यावरण विषाक्त पदार्थों और प्रदूषकों के संपर्क में आने से सेलुलर क्षति हो सकती है और उम्र बढ़ने में तेजी आ सकती है।

मनोवैज्ञानिक कारक: अध्ययनों से पता चला है कि पुरानी अकेलेपन या नाखुशी जैसे कारक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया में मन-शरीर के कनेक्शन को उजागर करते हुए किसी व्यक्ति की जैविक उम्र में वर्षों को जोड़ सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर

जब डॉनल्ड ट्रंप की नीतियां भारत के ख़िलाफ़ हैं तो फिर मोदी की नीतियां अमेरिकी हितों पर चोट क्यों न दें?

कमलेश पांडेय

जब भारत के गांवों में किसी से विवाद बढ़ने पर और घात-प्रतिघात की परिस्थितियों के पैदा होने पर पारस्परिक हुक्का-पानी या उठक-बैठक, खान-पान बन्द करने के रिवाज सदियों से चलते आए हैं तो फिर वैश्विक दुनियादारी में हम लोग इसे लागू क्यों नहीं कर सकते ताकि हमारे मुकाबिल खड़े होने वाले देशों को ठोस नसीहत मिल सके। वहीं, अक्सर यह भी कहा जाता है कि जो ज्यादा तेज बनता है, वह तीन जगहों पर बदबू फैलाता है जबकि चतुर व्यक्ति की कोशिश रहती है कि वह तीनों जगहों पर अपनी गमक व महक छोड़े। अव्वल दर्जे पर रूस, अमेरिका और चीन के साथ भारतीय सम्बन्धों पर फ्रांस, इजरायल, जापान जैसे दूसरे दर्जे के महत्वपूर्ण देशों के साथ भारतीय सम्बन्धों पर, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया जैसे तीसरे महत्वपूर्ण देशों के साथ भारत के सम्बन्धों पर भी यही बात लागू होती है।

यूँ तो पड़ोसी देशों से जुड़ी हमारी नीतियों में, मुस्लिम बहुल अरब देशों से जुड़ी हमारी नीतियों में, आशियान देशों से जुड़ी हमारी नीतियों में, जी-सेवन, ब्रिक्स, जी-20, एससीओ, नाटो, मध्य एशिया, यूरोप, दक्षिण-पूर्वएशिया से जुड़ी लुक ईस्ट की नीतियों या फिर संयुक्त राष्ट्र संघ से जुड़े भारतीय नीतियों के दृष्टिगत हमारी गुटनिरपेक्ष सोच सदैव सराहनीय रही है लेकिन जब हम अपने वैश्विक संरक्षक रूस के साथ, दुःख के दोस्त/मददगार इजरायल के साथ खुलेआम खड़े होने से हिचकते हैं तो कहीं न कहीं अशांति को प्रश्रय देते हैं और भारत के साथ मित्रता का छल रचने वाला अमेरिका यही तो चाहता है।

अमेरिका, यूरोप को साथ लेकर जब भी रूस को दबाना चाहे तो हमें खुलेआम रूस के साथ खड़ा होना चाहिए ताकि अमेरिका संभल जाए। इसी प्रकार जब इजरायल को अरब देश दबाना चाहें तो हमें इजरायल को संरक्षण देना चाहिए ताकि अरब देश सुधर जाएं। इसी प्रकार जब चीन भारत के पड़ोसियों में दिलचस्पी ले, आशियान देशों, अरब देशों, यूरोपीय देशों, अफ्रीकी देशों में अपनी पैठ बढ़ाए तो जापान, रूस, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील को साधकर संतुलित प्रतिरक्षात्मक नीति अपनाएं क्योंकि अमेरिका और चीन हमारे साथ शत्रुतापूर्ण चालें हमेशा चलते रहेंगे। पाकिस्तान परस्त तुर्की, अमेरिका परस्त सऊदी अरब आदि कभी हमारे स्वाभाविक मित्र नहीं हो सकते। इसलिए वैश्विक कूटनीति में रूस, इजराइल, जापान, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के कूटनीतिक व प्रतिरक्षात्मक महत्व हैं जिसके दृष्टिगत ही हमें कोई भावी कदम बढ़ाने चाहिए।

इसके लिए हमें पाकिस्तान और बंगलादेश जैसे इस्लामिक दुश्मनों के दिनदहाड़े सफाए की योजना हमें बनानी पड़ेगी। अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव, कम्बोडिया, थाईलैंड आदि पड़ोसी देशों को दुनियावी लाभ देकर पटाये रखना चाहिए और इन्हें भारतीय परिसंघ में शामिल करने योग्य कूटनीति अपनानी चाहिए। जिस तरह से रूस (यूएसएसआर) विरोधी नाटो की तर्ज पर इजरायल विरोधी इस्लामिक नाटो बना है, उसके दृष्टिगत हिन्दू और बौद्ध बहुल देशों को एकजुट करके भारतीय परिसंघ बनाना होगा ताकि जब अमेरिका या चीनी इशारे पर भारत के खिलाफ इस्लामिक देश एकजुटता दिखाएं तो दक्षिण-पूर्वएशियाई बौद्ध देश भारत की मदद करें। इसी नजरिए से चीन से भी चतुराई पूर्वक सम्बन्ध बनाए रखना भारत के हित में होगा। वहीं, इजरायल को सहयोग देकर इनके मन में भय बनाए रखना होगा कि भारत अकेला नहीं है। हमारी विशाल आबादी और रूसी-इजरायल तकनीकी सहयोग दुनिया के किसी भी हिंसक गठबंधन पर भारी पड़ेंगे।

कहना न होगा कि एक ओर जहां चीन-भारत से निपटने के लिए अमेरिका ईसाई, यहूदी और इस्लाम को एकजुटता प्रदान करने वाले अब्राहम परिवार को बढ़ावा दे रहा है, वहीं, पाकिस्तान के सहयोग से इस्लामिक देशों को एकजुट करके भारत को भयभीत रखना चाहता है। चूंकि पाकिस्तान पर चीन का हाथ है, अमेरिका विरोधी ईरान से चीनी सांठगांठ है, इसलिए भारत को अतिशय सावधान रहने की जरूरत है। जिस तरह से अमेरिका ने रूसी तेल खरीददारी के दृष्टिगत भारत पर अप्रत्याशित तरीके से टैरिफ बढ़ाकर मित्रघाती होने का परिचय दिया, उसी तरह से अब ईरान के भारतीय हित वाले चाबहार बंदरगाह को प्रतिबंधों से दी गई छूट वापस ले ली है। भले ही ऐसा करके ट्रंप प्रशासन ईरान पर दबाव बनाना चाहता है लेकिन इससे भारत को भी बड़ा झटका लगेगा। देखा जाए तो 50 प्रतिशत टैरिफ थोपने के बाद अमेरिका का यह एक और भारत विरोधी कदम है जिससे चीन को परोक्ष मदद मिलेगी और भारतीय हितों को चोट पहुंचेगी।

देखा जाए तो अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दूसरी बार सत्ता संभालने के साथ ही चाबहार को मिली छूट खत्म करने के एग्जिक्यूटिव ऑर्डर पर साइन कर दिए थे पर अब आगामी 29 सितंबर से इसे लागू करने का आदेश जारी हुआ है। इसके बाद अगर कोई कंपनी या संस्था चाबहार के संचालन में शामिल होती है तो उस पर भी अमेरिकी प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। यह भारतीयों के दूरगामी हितों के खिलाफ दूसरी महत्वपूर्ण कार्रवाई है। उसमें भी खास बात यह कि भारत इस बंदरगाह (पोर्ट) पर अरबों रुपये का निवेश कर चुका है और यहां एक टर्मिनल भी बना रहा है लेकिन अब अमेरिकी प्रतिबंधों की वजह से उसके लिए यहां काम करना मुश्किल हो सकता है। इससे भारत का निवेश भी डूब सकता है।

सच कहूं तो ईरान के चाबहार पोर्ट का मामला भी बहुत कुछ रूसी तेल जैसा है। जब यूक्रेन युद्ध रोकने के लिए रूस पर अमेरिका दबाव नहीं बना पाया तो उसने तेल के व्यापार पर भारत और चीन पर दोष डालना शुरू कर दिया। यही कहानी ईरान के साथ है। पिछले दिनों इस्राइल-ईरान टकराव और उसमें अमेरिकी दखल के बावजूद तेहरान झुकने को तैयार नहीं हुआ था तो अब मैक्सिमम प्रेशर की बात कही जा रही है। चाबहार पर बैन उसी अमेरिकी रणनीति का हिस्सा है। यह भी रूस जैसा मामला ही है और ईरान के साथ रूस और भारत दोनों के सम्बन्ध बेहतर हैं। इसलिए अमेरिका ने इसे अपना दूसरा निशाना बनाया है। इससे जाहिर है कि अमेरिका निज लक्ष्यप्राप्ति के लिए हरसंभव दांव चलेगा और भारत अमेरिकी भूलभुलैया में आज नहीं तो कल अवश्य फंसेगा!

कहना न होगा कि भारत के लिए चाबहार पोर्ट का रणनीतिक और कारोबारी महत्व है। भारत के लिए चाबहार बंदरगाह की अहमियत व्यापार से अधिक रणनीतिक यानी प्रतिरक्षात्मक है। यह पोर्ट उसे पाकिस्तान को बाईपास कर सीधे अफगानिस्तान, मध्य एशिया तक पहुंच देता है। वहीं, चाबहार पोर्ट उस इंटरनैशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर का अहम हिस्सा है जिसकी शुरुआत भारत, रूस और ईरान ने मिलकर की थी। यदि इसे सड़क और रेल नेटवर्क से जोड़ दिया जाए, तो यह कॉरिडोर सीधे यूरोप तक पहुंचने का आसान, सस्ता और छोटा रास्ता देता है।

वहीं, परिवर्तित अमेरिकी नीति में चीन का फायदा दृष्टिगोचर हो रहा है क्योंकि चाबहार पोर्ट पर बैन से भारत या ईरान नहीं, बल्कि खुद अमेरिका पर भी असर डाल सकता है। क्योंकि इस पोर्ट को पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह का जवाब माना जा रहा है जो चीन के महत्वाकांक्षी बीआरआई प्रॉजेक्ट का हिस्सा है। ऐसे में यदि इस क्षेत्र से भारत हटा, तो सीधा फायदा चीन को होगा। इससे वॉशिंगटन की वजह से पेइचिंग को रणनीतिक व्यापारिक बढ़त मिल जाएगी। इसलिए यह ट्रंप एडमिनिस्ट्रेशन की सबसे बड़ी खामी कही जाएगी कि विरोधियों पर पकड़ बनाने की उसकी हर कोशिश उसके ही दोस्तों को नुकसान पहुंचाती है। लगता है कि वह अब ठान चुका है कि अमेरिका की कीमत पर किसी को आगे नहीं बढ़ने देगा अंजाम चाहे जो भी हो। भारत को इससे ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

"साहित्य अकादमी का कलंक" "न्याय के बिना प्रतिष्ठा संभव नहीं, मौन अब अपराध है"

साहित्य अकादमी पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोप केवल एक व्यक्ति की विफलता नहीं, बल्कि पूरे साहित्यिक समाज की परीक्षा हैं। अदालत ने माना है कि पद का दुरुपयोग हुआ और शिकायतकर्ता को दबाने की कोशिश की गई। फिर भी आरोपी सचिव पद पर बने हुए हैं। यह चुप्पी अस्वीकार्य है। जब तक उन्हें हटाया नहीं जाता, लेखकों को अकादमी से असहयोग करना चाहिए। साहित्य तभी सच्चा रह पाएगा जब वह अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ निर्भीक होकर खड़ा होगा। मौन अपराध है, और शून्य सहनशीलता ही एकमात्र नीति।

--- डॉ प्रियंका सौरभ

साहित्य अकादमी भारत की सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था मानी जाती रही है। यह केवल एक सरकारी निकाय नहीं बल्कि भाषाओं और साहित्य की विविध परंपराओं का प्रतीक भी है। ऐसे में जब इस संस्था के शीर्ष पदाधिकारी पर गंभीर यौन उत्पीड़न के आरोप लगते हैं और अदालत यह स्थापित कर देती है कि उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग किया है, तो यह केवल व्यक्तिगत नैतिक विफलता नहीं बल्कि पूरे साहित्यिक समाज पर धब्बा है।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने स्पष्ट कहा है कि अकादमी का सचिव यौन उत्पीड़न से महिलाओं की रक्षा अधिनियम के तहत नियोक्ता की श्रेणी में आता है और शिकायतकर्ता की बर्खास्तगी प्रतिशोध का परिणाम थी। अदालत ने उन्हें बहाल करने का आदेश दिया और यह भी माना कि अकादमी ने जाँच की निष्पक्ष प्रक्रिया को बाधित किया। यह टिप्पणी किसी साधारण प्रशासनिक गड़बड़ी की ओर इशारा नहीं करती बल्कि यह दर्शाती है कि संस्था के भीतर शक्ति का उपयोग न्याय की रक्षा के बजाय दमन के लिए किया गया।

पीड़िता के आरोप मामूली नहीं थे। अनचाहे स्पर्श, अश्लील टिप्पणियाँ और लगातार यौन दबाव जैसे अनुभव उन्होंने साझा किए। यह कोई एक बार की घटना नहीं बल्कि एक सिलसिला था। संस्थान के भीतर कई लोग इस वातावरण से परिचित थे फिर भी चुप्पी साधे रहे। यही चुप्पी उत्पीड़क को और निर्भीक बनाती है और पीड़िता को और अकेला कर देती है।

साहित्य की असली शक्ति उसकी नैतिकता में है। अगर साहित्यकार समाज के अन्याय पर कलम चलाते हैं लेकिन अपने ही घर के अन्याय पर चुप रहते हैं, तो साहित्य की विश्वसनीयता खो जाती है। जब तक आरोपी सचिव अपने पद पर बना रहता है तब तक अकादमी के किसी भी आयोजन में भागीदारी स्वयं कलंक का हिस्सा बनने जैसा होगा। पुरस्कार लेना, कविताएँ पढ़ना या गोष्ठियों में शिरकत करना मानो यह स्वीकार करना होगा कि हम उत्पीड़न को नजरअंदाज कर सकते हैं।

इस समय आवश्यकता है शून्य सहनशीलता की। यौन उत्पीड़न और जातिगत उत्पीड़न जैसे अपराधों पर कोई समझौता नहीं हो सकता। जब संस्था का शीर्ष अधिकारी ही आरोपी हो और फिर भी पद पर बना रहे, तो यह संदेश जाता है कि संस्थान अपराध को ढकने के लिए तत्पर है। इससे न केवल पीड़िता हतोत्साहित होती है बल्कि अन्य महिलाएँ भी शिकायत दर्ज कराने से डरने लगती हैं। यह वातावरण पूरे साहित्यिक समाज के लिए घातक है।

और भी चिंताजनक यह है कि कुछ प्रकाशक ऐसे व्यक्तियों को अब भी मंच दे रहे हैं। उन्हें बड़े लेखक की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है, उत्सवों और मेलों में

सम्मानित किया जा रहा है। यह प्रवृत्ति केवल बिक्री और लाभ का मामला नहीं है, बल्कि यह उत्पीड़न की संस्कृति को सामाजिक मान्यता देने जैसा है। ऐसे में लेखकों और पाठकों की ज़िम्मेदारी है कि वे ऐसे प्रकाशकों से सवाल पूछें। साहित्यिक गरिमा केवल शब्दों में नहीं बल्कि आचरण में भी झलकनी चाहिए।

यह समय लेखक समाज की अग्निपरीक्षा का है। क्या हम चुप रहेंगे और संस्था की रक्षा के नाम पर अन्याय को ढकेंगे, या न्याय और सम्मान के लिए खड़े होंगे। अकादमी की प्रतिष्ठा उसकी इमारतों और पुरस्कारों से तय नहीं होती, वह उसकी पारदर्शिता और नैतिक आचरण से तय होती है। अगर यह खो जाएगी तो सारे पुरस्कार और समारोह केवल खोखले अनुष्ठान रह जाएँगे।

लेखकों को अब साफ़ रुख अपनाना होगा। जब तक आरोपी पद पर है, तब तक अकादमी के किसी भी कार्यक्रम में भागीदारी नहीं होनी चाहिए। यह बहिष्कार केवल प्रतीकात्मक कदम नहीं बल्कि समाज को स्पष्ट संदेश देगा कि साहित्य अन्याय के साथ समझौता नहीं कर सकता।

आगे का रास्ता भी हमें मिलकर तय करना होगा। संस्थागत सुधार ज़रूरी है, शिकायत समितियों को स्वतंत्र बनाया जाए और उनकी कार्यवाही सार्वजनिक की जाए। लेखकों और पाठकों को चाहिए कि वे नैतिक बहिष्कार को आंदोलन की तरह चलाएँ। प्रकाशकों से जवाबदेही माँगी जाए और पूरे सांस्कृतिक परिदृश्य को संवेदनशील बनाया जाए। यह केवल अकादमी का नहीं बल्कि पूरे समाज का सवाल है।

यह संकट हमें याद दिलाता है कि पद और सत्ता किसी को भी कानून और नैतिकता से ऊपर नहीं बना सकते। अगर आरोपी अपने पद पर बना रहता है तो यह केवल पीड़िता का नहीं बल्कि पूरे साहित्यिक समाज का अपमान है। लेखकों, कवियों, आलोचकों और पाठकों को अब मिलकर कहना होगा कि हम अन्याय के साथ खड़े नहीं हो सकते। साहित्य तभी अपनी असली ताक़त दिखा पाएगा जब वह सत्ता से सवाल पूछेगा और शोषण के खिलाफ निर्भीक होकर खड़ा होगा।

अगर हम इस परीक्षा में असफल हुए तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें डरपोक और मौन समाज के रूप में याद करेंगी। लेकिन अगर हम साहस के साथ खड़े हुए तो साहित्य शब्दों के साथ-साथ न्याय और गरिमा का भी प्रहरी बन सकेगा। यही साहित्य की असली पहचान है और यही हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी।

नवरात्रि विशेष : माँ के नौ स्वरूप : आधुनिक जीवन के नौ पाठ

उमेश कुमार साहू

नवरात्र केवल देवी की पूजा का समय नहीं है बल्कि यह जीवन को दिशा देने वाला चेतना और परिवर्तन का महापर्व है। माँ के नौ रूप हमें सिर्फ धार्मिक शक्ति ही नहीं बल्कि आज की दुनिया के लिए जरूरी जीवन प्रबंधन, साहस, संवेदनशीलता और संतुलन सिखाते हैं।

आज जब इंसान तनाव, प्रतिस्पर्धा, प्रदूषण और रिश्तों की उलझनों से जूझ रहा है, नवरात्र हर दिन एक नया पाठ लेकर आता है। आइए जानते हैं कि इन नौ दिनों को हम कैसे आधुनिक जीवन के नौ संकल्पों में बदल सकते हैं -

शैलपुत्री से सीखें आत्मविश्वास और स्थिरता

माँ पर्वतराज की पुत्री हैं - अडिग और अचल।

• आज की भाषा में, वे हमें कहती हैं: "डर मत, मजबूत रहो। लक्ष्य बदल सकता है, पर हिम्मत कभी नहीं।"

संकल्प : हर चुनौती में स्थिर रहना, भागना नहीं।

ब्रह्मचारिणी से सीखें धैर्य और अनुशासन

उनकी साधना हमें याद दिलाती है कि सफलता शॉर्टकट से नहीं, निरंतर प्रयास से मिलती है।

• आज के छात्रों और युवाओं के लिए सबसे बड़ा संदेश - धैर्य ही असली ताक़त है।

संकल्प : मोबाइल और स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण, पढ़ाई और करियर पर फोकस।

चंद्रघंटा से सीखें साहस और स्पष्टता

वे रणभूमि की देवी हैं।

• आज के दौर में इसका अर्थ है - सही बात पर डटे रहना, चाहे पूरी भीड़ आपके खिलाफ हो।

संकल्प : अन्याय, भ्रष्टाचार और झूठ के विरुद्ध आवाज़ उठाना।

कुष्मांडा से सीखें सकारात्मकता और सृजन

मुस्कान से ब्रह्मांड रचने वाली माँ सिखाती हैं - नेगेटिविटी को मुस्कान से हराओ।

• यह दौर नकारात्मक खबरों और अफवाहों का है, यहाँ सकारात्मक रहना ही सबसे बड़ा साहस है।

संकल्प : हर दिन कुछ नया सीखना और रचनात्मकता को बढ़ाना।

स्कंदमाता से सीखें रिश्तों में ममता और जिम्मेदारी

• आज के व्यस्त जीवन में रिश्ते अक्सर पीछे छूट जाते हैं। माँ स्कंदमाता याद दिलाती हैं - परिवार ही असली शक्ति है।

संकल्प : हर दिन परिवार और अपनों के लिए समय निकालना।

कात्यायनी से सीखें सेवा और समाजहित

वे अन्याय के अंत और धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुईं।

• आज के समय में, यह है - समाज के कमजोर वर्ग की मदद करना।

संकल्प : हर माह ज़रूरतमंद को सहयोग देना (शिक्षा, भोजन, कपड़े आदि)।

कालरात्रि से सीखें निर्भयता

उनका भयंकर रूप कहता है -भय से मुक्ति ही असली आज़ादी है।

• आज के समय में यह सन्देश महिलाओं की सुरक्षा और आत्मरक्षा का प्रतीक है।

संकल्प : भय से नहीं, समाधान से जीना।

महागौरी से सीखें सादगी और पवित्रता

• वे बताती हैं - सच्ची सुंदरता महंगे कपड़े या ब्रांडेड लाइफस्टाइल में नहीं, बल्कि स्वच्छता और पवित्रता में है।

संकल्प : सरल जीवन, स्वच्छ पर्यावरण और शुद्ध विचार अपनाना।

सिद्धिदात्री से सीखें संतुलन और संतोष

वे सभी सिद्धियाँ देने वाली माँ हैं।

• आज के समय में यह अर्थ है - ज़िंदगी में संतोष और मानसिक शांति सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संकल्प: हर परिस्थिति में आभार व्यक्त करना और संतुलन बनाए रखना।

नवरात्रि का असली संदेश

नवरात्र हमें याद दिलाता है कि शक्ति हमारे भीतर ही है। अगर हम हर दिन एक-एक देवी के गुण को जीवन में उतार लें तो नवरात्र पूजा से आगे बढ़कर जीवन बदलने वाला पर्व बन जाएगा।

यह केवल नौ दिन की भक्ति नहीं, बल्कि नौ संकल्पों से नया जीवन गढ़ने का अवसर है।

आज के युवाओं, परिवारों और समाज को नवरात्र यही पुकार कर कहता है - "दीपक सिर्फ मंदिर में मत जलाओ, अपने भीतर भी एक दीप जलाओ। माँ की पूजा से पहले, माँ के गुणों को अपने जीवन में उतारो।"

यही होगा सच्चा नवरात्र - चेतना, शक्ति और परिवर्तन का उत्सव।

बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में पितृपक्ष अमावस्या पर अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, सचिव हुक्माराम सानपुरा, सह सचिव ढगलाराम सेपटा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार,समस्त कार्यकारणी पदाधिकारियों व गौभक्त । महा प्रसादी लाभार्थी नेमाराम मुलेवा, भैराराम सोलंकी, जीताराम पंवार, धन्नाराम देवड़ा, मोतीलाल हाम्बड़, जेठाराम गेहलोत, वेनाराम चोयल, मांगीलाल चोयल, डायाराम सोलंकी, भंवरलाल बर्फा, मोहनलाल बर्फा द्वारा महा प्रसादी का आयोजन किया गया व अन्य ने गौसेवा की। इस दौरान भजन गायक श्री आईमाता जी भजन मंडली बालाजी नगर भजन गायक अचलाराम हाम्बड़, मोहनलाल हाम्बड़ पुष्पा सीरवी, गिरधारीलाल प्रजापत ,भेराराम सैणचा, लोकेश,पीटु सागर , लक्ष्मण सुथार,द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए।

स्लाइट में "ऑपरेशन सिंदूर" पर आधारित लेज़र शो का आयोजन

लोगोंवाल, (जगसीर सिंह) - भारत सरकार की प्रमुख तकनीकी संस्था संत लोंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी स्लाइट लोंगोवाल में टैकफैस्ट -2025 के समापन समारोह पर ऑपरेशन सिंदूरस्र पर आधारित लेज़र शो का प्रभावशाली, भावनात्मक और देशभक्ति से भरपूर इवेंट आयोजित किया गया । इस समागम का शुभ आरंभ निर्देशक स्लाइट प्रो. मणिकांत पासवान ने किया । इस समय निर्देशक स्लाइट प्रोफेसर मणिकांत पासवान ने अपने भाषण में कहा कि ऑपरेशन सिंदूरस्र यह नाम केवल एक सैन्य अभियान नहीं, भारत मां के सम्मान की रक्षा में डटे उन वीर जवानों की गाथा है, जिन्होंने सीमा पार जाकर आतंकवाद के अड्डों को ध्वस्त किया, और यह संदेश दिया कि भारत अब चुप नहीं बैठेगा,स्रसिंदूरस्र हमारे देश की नारी शक्ति, सम्मान और संस्कृति का प्रतीक है। जब कोई शत्रु हमारे देश की अस्मिता को चुनौती देता है, तो भारत अपने वीरों को भेजता है, ताकि मां का सिंदूर कभी धूमिल न हो। उन्होंने कहा कि इस लेज़र शो के माध्यम से हम उन गुमनाम नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना, हमें सुरक्षित भविष्य देने के लिए अपना वर्तमान बलिदान किया। यह केवल एक कहानी नहीं, हमारी जिम्मेदारी की याद दिलाने वाला संदेश है,कि हम भी अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर देश के विकास में योगदान दें,आइए इस प्रस्तुति का न केवल आंखों से, बल्कि दिल से अनुभव करें,और याद रखें एक राष्ट्र की असली ताकत उसकी जनता के संकल्प में छिपी होती है। इस समय कॉलेज के प्रो. एम.एम. सिन्हा, प्रो इंद्राज सिंह, प्रो.एम . एम. सिंह,प्रो शंकर सिंह और संस्थान के 3500 विधार्थी उपस्थित थे।

डिजिट्ल युग में किताबों की अहमियत

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह. सहज़

हरदा मध्य प्रदेश

आज का दौर डिजिटल युग कहलाता है। जानकारी हासिल करने के लिए केवल एक क्लिक काफ़ी है। मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन लाइब्रेरी और ई-बुक्स ने पढ़ाई का तरीक़ा बदल दिया है। लेकिन इन तमाम विकल्पों के बीच एक सवाल अक्सर उठता है कि क्या अब छपी हुई किताबों की अहमियत कम हो रही है?

किताब केवल जानकारी का साधन नहीं है, बल्कि वह एक अनुभव भी है। पन्नों की ख़ुशबू, हाथों में पुस्तक का वज़न, और धीरे-धीरे पढ़ने की आदत,ये सब बातें ई-बुक्स में नहीं मिल पातीं। किताबें हमें धैर्य, एकाग्रता और गहराई से सोचने की आदत सिखाती हैं, जबकि डिजिट्ल प्लेटफ़ॉर्म पर ध्यान भटकने की संभावना ज्यादा रहती है।

साथ ही, किताबें हमें विरासत से जोड़ती हैं। हमारे दादा-दादी की

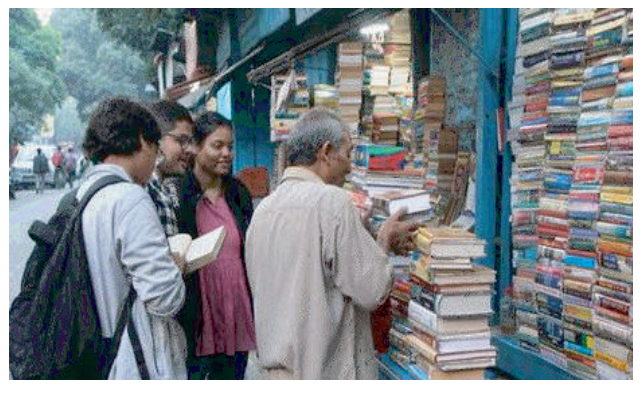

अलमारी में रखी पुरानी पुस्तकें सिर्फ ज्ञान का खज़ाना नहीं, बल्कि पारिवारिक स्मृतियों का हिस्सा भी होती हैं। डिजिटल फॉर्मेट में यह भावनात्मक जुड़ाव दुर्लभ है हालांकि यह भी सच है कि ई-बुक्स ने पढ़ने को आसान और सुलभ बनाया है। लंबी-लंबी किताबें अब जेब में समा सकती हैं। यात्रा करते समय मोबाइल या टैबलेट ही लाइब्रेरी बन जाते हैं। विशेषकर छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए यह सुविधा अत्यंत उपयोगी है।

अतः आज के समय में किताब और ई-बुक दोनों का अपना-अपना महत्व है। हमें किसी एक को छोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि दोनों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। असली बात यही है कि पढ़ना जारी रहना चाहिए,चाहे वह कागज़ की किताब पर लिखे शब्द हों या स्क्रीन पर चमकते अक्षर।

धन्यवाद्,

ओड़िशा कांग्रेस ने मतदाता धोखाधड़ी निवारण हेतु हस्ताक्षर अभियान शुरू किया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : संसद में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा उठाए गए मतदाता धोखाधड़ी निवारण के मुद्दे को ओडिशा के घर-घर तक पहुँचाने के लिए, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भक्त चरण दास के नेतृत्व में, ओडिशा प्रदेश अनुसूचित जाति विभाग ने आज कांग्रेस भवन में एक हस्ताक्षर अभियान शुरू किया। यह हस्ताक्षर अभियान ओडिशा प्रदेश अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष एडवोकेट मानस कुमार मल्लिक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित ओडिशा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्रीयुत दास ने कहा कि मोदी सरकार और मोहन सरकार मतदाता सूची में छेड़छाड़ करके सत्ता में आ रही हैं। कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र काडाम ने भी कहा कि देश और राज्य में वर्तमान में वोट चोरी करने वाली सरकार सत्ता में नहीं है। विभाग अध्यक्ष ऐनाजीबी मलिक ने कहा कि राज्य अनुसूचित जाति विभाग पंचायत स्तर पर जाकर आम लोगों को मतदान में धांधली के मुद्दे पर जागरूक करेगा। आइनजीबी मलिक ने कहा कि इस मुद्दे पर आने वाले दिनों में ओडिशा के 11 घनी आबादी वाले शहरों में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएंगी। कार्यक्रम में विभाग के उपाध्यक्ष व पूर्व विधायक सुदर्शन जेना, उपाध्यक्ष अशोक नायक, जानकी मल्लिक, एल माणिकप्रभा, वोकाली सेठी, महासचिव राजेंद्र जेना, रामलाल सुनानी, शिवप्रकाश बेहरा, सुदर्शन जेना, हरिहर मंडल, गोविंदा नायक, आशीष मल्लिक, देवब्रत बेहरा, कैलाश नायक, बाबुली मल्लिक, खोरधा जिला अध्यक्ष जयंत भोई, ढेंकनाल जिला अध्यक्ष गोवर्धन शेखर नायक, अंगुल जिला अध्यक्ष व वकील राजकिशोर नायक, कटक उपस्थित थे. जिला अध्यक्ष प्रताप मल्लिक, भद्रक जिला अध्यक्ष विद्याधर जेना, विभाग संपादक प्रमोद मल्लिक, रंजन भोई, विकास दास, संजय मल्लिक, शरत नायक, वकील संजय मल्लिक, ययाति केशरी पटनायक, वकील देबाशीष मल्लिक, शशिकांत जेना, शुभाकर मुखी, राठी कुंभार, मंटू मल्लिक, लंबोदर नायक, रंजन जेना, बनमाली बिशोई, हक्का सुना, अर्जुन बंका, कार्यक्रम में राजकिशोर बेहरा, जम्भू मल्लिक, जयंत बेहरा, प्रकाश जेना और जीवन मल्लिक ने भाग लिया और अपनी राय दी.

तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार ने श्रद्धालुओं से भरे ऑटो में जोरदार टक्कर मारी, घायल

अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज ढोलना कोतवाली क्षेत्र में तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार ने श्रद्धालुओं से भरे ऑटो में जोरदार टक्कर मार दी, जिससे ऑटो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। हादसे में ऑटो में बैठे श्रद्धालुओं सहित बाइक सवार भी गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि चिकित्सकों ने दो लोगों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें अलीगढ़ रेफर कर दिया।

बताया जाता है कि जनपद अलीगढ़ के थाना बरला क्षेत्र के खरगूपुरा गांव के आधा दर्जन से अधिक लोग आज सुबह टेंपो में सवार होकर जनपद कासगंज के पटियाली थाना क्षेत्र के भोले बाबा के आश्रम में आयोजित सत्संग में शामिल होने जा रहे थे।

जैसे ही उनका टेंपो ढोलना थाना क्षेत्र के कासगंज मार्ग स्थित नगला पट्टी के समीप पहुँचा, तभी सामने से आ रहे बाइक सवार ने टेंपो में जोरदार टक्कर मार दी। इससे टेंपो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया।

हादसे में टेंपो चालक नरेश पुत्र

रामपाल, रामदास और उनकी पत्नी चमेली, लाओ देवी पत्नी राम सिंह, मछला पत्नी रामस्वरूप, विमलेश पत्नी पप्पू (सभी खरगूपुरा, थाना बरला, जनपद अलीगढ़) सहित बाइक सवार आशुतोष पुत्र विश्वनाथ सिंह (कमालपुर सिढपुरा) गंभीर रूप से घायल हो गए।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां चिकित्सकों ने नरेश और रामदास की गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें अलीगढ़ रेफर कर दिया।

बताया जाता है कि बाइक सवार आशुतोष अपने घर पर कल देवी जागरण में भाग लेने वाला था, इसी के चलते वह ढोलना रिश्तेदारी में न्योता देने जा रहा था।

नवरात्रि पर सहावर पुलिस का बड़ा एक्शन

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज, सहावर कस्बे में नवरात्रे पर सभी मांस-मीट की दुकानो पर रहेगी पुलिस की पैनी नज़र

होटल संचालकों को दी चेतावनी मीट बिक्री पाई गई तो होगी सख्त कार्रवाई, सहावर प्रभारी निरीक्षक चमन कुमार गोस्वामी ने कस्बे में दिए सख्त दिशा निर्देश, मांस बिक्री की जानकारी होने पर पुलिस करेगी सख़्त कार्रवाई , नवरात्रि पर्व पर धार्मिक भावनाओं का सम्मान और शांति व्यवस्था बनाए रखने को लेकर पुलिस ने उठाए क़दम।

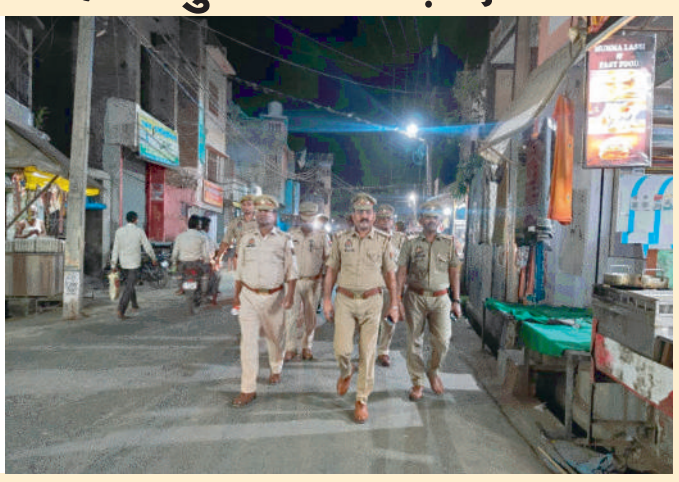

श्री सनातन धर्म रामलीला की तरफ से रामलीला की तैयारी संपूर्ण । पहले नवरात्रे से शुरू होगी रामलीला

सुनाम, (जगसीर लोगोंवाल) - शहर की सबसे प्राचीन तथा मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली श्री सनातन धर्म रामलीला क्लब की स्टेज की तरफ से रामलीला की तैयारियां पूर्ण रूप से मुकम्मल हो चुकी है। यह जानकारी देते हुए क्लब के प्रधान मनजीत सिंह काका ब स्वामी देव सिंह ने बताया के वर्ष 2025 के लिए रामलीला की तैयारियां पूर्ण रूप से संपूर्ण हो चुकी हैं। श्री सनातन धर्म रामलीला की स्टेज बरदायिनी है ।यहां लोगों की मन्नतें पूर्ण होती हैं। रामलीला के दौरान धार्मिक तथा सामाजिक मूल्यों का खास ध्यान रखा जाता है ।पुराने पात्रों के साथ-साथ नए पात्रों में भी काफी उत्साह देखा जा रहा है रामलीला क्लब की धार्मिक मर्यादा के अनुसार पहले नवरात्रे से शुरू होगी जिसमें कैबिनेट मंत्री श्री अमन अरोड़ा जी मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे तथा मुनि श्री श्री 1008 स्वामी चंद्र मुनि जी की तरफ से ज्योति प्रचंड कर रामलीला की शुरुआत की जाएगी इस समय क्लब प्रधान मनजीत सिंह काका तथा स्वामी देव सिंह के साथ क्लब के सभी पात्र मौजूद थे।

स्लाइट में तकनीकी महोत्सव टैकफैस्ट - 2025 का भव्य समापन

38 संस्थानों से आए 250 प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा

लोंगोवाल, (जगसीर सिंह) - संत लोंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी स्लाइट का टैकफैस्ट - 2025 जो तकनीकी नवाचार, सांस्कृतिक एकता और छात्र प्रतिभा को मंच देने वाला वार्षिक महोत्सव है, का भव्य समापन 20 सितंबर को हुआ। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. शालिनी बत्रा, डीन, फैकल्टी, थापर यूनिवर्सिटी, पटियाला, एवं स्लाइट के निर्देशक प्रो. मणिकांत पासवान ने उद्घोषण किया। कार्यक्रम में प्रो. एम. एम. सिन्हा (डीन), प्रो. इंद्राज सिंह, प्रो. एम. एम. सिंह, डॉ. प्रीत पाल कौर, डॉ. शंकर सिंह (हेड, मैकेनिकल विभाग) समेत अनेक वरिष्ठ शिक्षक और कर्मचारी शामिल हुए। इस बहुआयामी महोत्सव में 38 संस्थानों से आए 250 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सभी विजेताओं को प्राइज मेडल, कैश अवॉर्ड और प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। विशेष रूप से अफ्रीका से आए छात्रों जो केपीआर/एलपीयू कॉलेज, जालंधर और कुछ चंडीगढ़ के संस्थानों से थे ,ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार प्राप्त किए और हिमाचल प्रदेश के छात्रों ने भी इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया,सांस्कृतिक संध्या में नाटी, भांगड़ा, कत्थक जैसे विविध भारतीय नृत्य-रूपों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने भारत की सांस्कृतिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया। कार्यक्रम के अंत में लेज़र शो ने दर्शकों को तकनीक और कला के अद्भुत समागम का अनुभव कराया। टैकफैस्ट - 2025 सभी प्रतिभागियों, आयोजकों, अतिथियों और दर्शकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया, जिसमें तकनीकी दक्षता और सांस्कृतिक समरसता की झलक देखने को मिली।

वह लड्डू जिसने समाज की सोच बदल दी

शिवानन्द मिश्रा

यह कोई साधारण लड्डू नहीं था। इस लड्डू के प्रसाद ने गुजरात के सामाजिक चिंतन को नई दिशा दी और पूरी सोच बदल दी। भारत के अन्य हिस्सों की तरह गुजरात में भी पहले बेटों को अधिक महत्व दिया जाता था। गर्भपरीक्षण कर केवल पुत्र की चाह में बेटियों का गर्भपात करवाना आम था। इसके परिणामस्वरूप 1990 से 2005 के बीच जन्म लेने वाली पीढ़ी में बेटियाँ तेजी से गायब होने लगीं। जब विवाह की उम्र आई तो अनेक युवकों को कन्या मिलने में कठिनाई हुई।

समाज ने समझा कि यह स्थिति अस्वीकार्य है। तब सौराष्ट्र जलधारा ट्रस्ट ने पहल की। गुजरात के घर-घर से आटा, चीनी और घी एकत्रित किया गया और 6,500 किलो का विशाल लड्डू तैयार किया गया। सूरत में हुए भव्य कार्यक्रम में 35 फीट ऊँचा और 65 फीट चौड़ा लड्डू प्रदर्शित किया गया। इस आयोजन में 12 लाख लोग शामिल हुए। कार्यक्रम का नाम रखा गया—"बेटी बचाओ"। वहाँ उपस्थित सभी से शपथ दिलवाई गई कि वे अपनी बेटियों की हत्या नहीं करेंगे। इस लड्डू का प्रसाद 35 लाख घरों तक पहुँचाया गया।

कानूनन गर्भपरीक्षण अपराध था ही लेकिन अब समाज ने स्वयं इस पाप के विरुद्ध जागरूकता का बिगुल फूँक दिया। धर्मगुरुओं ने आगे बढ़कर कहा—"गर्भहत्या और स्त्रीहत्या से बचो।" साथ ही समाज ने दहेज जैसी कुप्रथा के खिलाफ भी चेतना जगाई। महँगी शादियों का बोझ बेटियों के पिता को तोड़ रहा था। तब समाज ने सामूहिक विवाह का आयोजन किया। बड़े-बड़े परिवारों ने भी अपने बच्चों की शादी सामूहिक विवाह में करना शुरू किया। बेटियों की शिक्षा निःशुल्क कर दी गई।

दरअसल, बेटी को बोझ मानने के तीन कारण थे— दहेज, पढ़ाई का खर्च, विवाह का खर्च।

समाज ने ये तीनों कारण समाप्त किए।

परिणामस्वरूप चमत्कार हुआ—बेटी अब बोझ नहीं रही। जिस बेटी को पहले गुजराती समाज "साँप का भार" समझता था, वही अब "तुलसी का क्यारा" बन गई। यह सब समाज ने अपनी शक्ति से किया, बिना किसी सरकारी आर्थिक सहायता के।

जागृत समाज ऐसा ही करता है। इसी बेटी बचाओ कार्यक्रम की प्रेरणा से राजर्षि नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में मुख्यमंत्री रहते हुए बेटी बचाओ आंदोलन शुरू किया। आगे चलकर प्रधानमंत्री बनने के बाद यही आंदोलन "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" के नाम से पूरे देश में प्रसिद्ध हुआ। इस महान आंदोलन की नींव उस लड्डू से पड़ी थी।

केंद्रीय गृहमंत्री के आश्वासन के बाद कुड़मी समुदाय का रेल रोको आंदोलन दो स्टेशन छोड़ हुआ समाप्त

एसटी सूची में कुडमी जाती को शामिल एवं कुडमाली भाषा आठवीं अनुसूची में दर्ज का था मुद्दा

रांची, झारखंड में कुड़मी जाती को अनुसूचित जनजाति में शामिल किए जाने और अपनी कुड़माली भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर रेल रोको आदि आंदोलन रत कुड़मी समुदाय के लोगों को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ बैठक के बाद आश्वासन मिलने पर रविवार को दो स्टेशन को छोड़कर बाकी सभी स्टेशन से अपना आंदोलन वापस ले लिया है।कुड़ती विकास मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष शीतल ओहदार ने बताया कि सरायकेला-खरसावां जिले के सिनी स्टेशन में जारी प्रदर्शन जल्द ही खत्म किया जाएगा, जबकि धनबाद जिले के प्रधानखंता में प्रदर्शन तब तक जारी रहेगा जब तक केंद्र बैठक की तारीख तय नहीं कर देता।उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री के कार्यालय से अमित शाह के साथ बैठक का आश्वासन मिलने के बाद हमने आंदोलन वापस लेने का फैसला किया है। हालांकि, अभी तारीख तय नहीं हुई है। इस घटनाक्रम को देखते हुए हमने दो स्टेशन को छोड़कर बाकी सभी स्टेशन से आंदोलन वापस लेने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि सिनी से आंदोलन जल्द ही वापस ले लिया जाएगा, जबकि प्रधान खंता में यह तब तक जारी रहेगा जब तक केंद्र द्वारा बैठक की तारीख तय नहीं कर दी जाती।निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते हुए, हजारों प्रदर्शनकारियों ने शनिवार को आदिवासी कुड़मी समाज (एकेएस) के बैनर तले रांची जिले के मुरी, राय, टाटीसिलवई स्टेशन, रामगढ़ के बरकाकाना, गिरिडीह के पारसनाथ, हजारीबाग के चरही, धनबाद के प्रधान खंता हंता, पूर्वी सिंहभूम के गालूडीह और बोकारो जिले के चंद्रपुरा में विभिन्न स्टेशन पर पटरियों पर धरना दिया। प्रदर्शनकारियों ने समुदाय के लिए अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा और संविधान की आठवीं अनुसूची में कुड़माली भाषा को शामिल करने की मांग की।एक अधिकारी ने बताया कि कुड़मी समुदाय के सदस्यों के रेल रोको आंदोलन के कारण शनिवार को सौ से अधिक ट्रेन या तो रद्द कर दी गईं, या उनका मार्ग परिवर्तित करना पड़ा या फिर उनकी यात्रा अंतिम ठहराव से पूर्व समाप्त कर दी गई।

करमजीत सिंह रिंटू ने किया संधू एन्क्लेव पार्क का उद्घाटन लोगों से किया वादा निभाया, विकास कार्यों को तेज़ी देने का आश्वासन

अमृतसर, 21 सितंबर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने आज पंचायत नौशहरा खुर्द स्थित संधू एन्क्लेव ए-ब्लॉक में बने पार्क का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कुछ समय पहले स्थानीय लोगों की मांग पर उन्होंने इस पार्क को बनवाने का वादा किया था, जिसे आज पूरा किया गया है। रिंटू ने बताया कि प्रतिदिन वे नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में जाकर लोगों की समस्याएँ सुनते हैं और उनका समाधान सुनिश्चित करते हैं।

रिंटू ने कहा कि आने वाले दिनों में सड़क निर्माण और अधूरे विकास कार्यों को प्राथमिकता देकर पूरा कराया जाएगा। उन्होंने विश्वास दिलाया कि नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र की सभी पंचायतों में शेष बचे विकास कार्यों को भी जल्द पूरा किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में विकास कार्यों के लिए फंड की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

इस मौके पर चंद्र प्रकाश, विशाखा सिंह, गुरप्रीत कटारिया, राहिल खन्ना, डॉ. आदित्य भगत, कुलदीप शर्मा, गुरप्रीत सिंह और कुलदीप सिंह सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

पश्चिमी सिंहभूम के पूर्व ईमानदार डीसी अमित खरे बने उपराष्ट्रपति के सचिव , रह चुके हैं प्रधानमंत्री के सलाहकार

तब खरे दंपति ने स्वतंत्र , इमानदार पत्रकारिता को दिया था सदैव सम्मान, वही आज सरकारी तंत्र चला रहा अपना मिडिया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , एक ईमानदार व्यक्तित्व के धनी आईएएस अधिकारी तथा तत्कालीन बिहार अब झारखंड के सिंहभूम में हुई बिहार

पशुपालन घोटाला सह चाईबासा में कोषागार से अवैध निकासी पर उद्भेदन करने वालों ईमानदार अधिकारी के रूप में गिने जाने वाले अमित खरे को उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन का सचिव नियुक्त किया गया है. उनका ही बनाया एफ आई आर था जिसपर हाल ही तक भ्रष्टाचारी अधिकारी ,नेता जेल जाते रहे उधर राजनीति गर्म रही . कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमेटी ने रविवार को उनके इस नियुक्ति को मंजूरी दी और कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने इसका आदेश जारी किया. आदेश के मुताबिक, खरे की नियुक्ति अनुबंध के आधार पर होगी और वह पदभार ग्रहण करने की तारीख से अगले तीन साल तक इस जिम्मेदारी को निभाएंगे.

सनद रहे कि अमित खरे 1985 बैच के झारखंड कैडर के आईएएस अधिकारी रहे हैं. उनका नाम उन गिने-चुने अधिकारियों में आता है, जिनकी छवि बेहद ईमानदार और सख्त मानी जाती है. खरे को विशेष रूप से चारा घोटाले का पर्दाफाश करने के लिए जाना जाता है, जिसने बिहार की राजनीति और प्रशासनिक व्यवस्था में भूचाल ला दिया था. इस घोटाले के खुलासे ने उन्हें देशभर में पहचान दिलाई थी . पशुपालन घोटाले के बाद चाईबासा के इस जिलाधिकारी देश दुनिया में रातों रात चर्चित है गये थे . पर उसके पूर्व से जिला जिलाधिकारी रहते तत्कालीन मिडिया जगत के साथ इनका संबंध काफी मधुर रहा, वैसे ही निधि खरें की भी रही । सच तो यह है कि तब जब मिडिया भी इमानदार , वफादार , जनता का भरोसेमंद हुआ करता था . सिंहभूम में केवल मुख्यालय नहीं सुदूरवर्ती इलाकों में भी मिडिया कार्यक्रमों आप सपत्नीक उपस्थित रहकर जनमानस की समस्या को सुनते थे, निराकरण करते थे . तब उनकी पत्नी निधि खरे उसी जिले के सरायकेला अनुमंडल अधिकारी थीं . आज दुर्भाग्य है उन्ही दोनों जिलों में प्रशासनिक अधिकारी पत्रकार सम्मेलन आयोजन करना बंद कर रखा है दो दशकों से । समय कितना महत्वपूर्ण है नेपाल की घटना के बाद यह जग जाहिर है गणतंत्र में . आज उसी चाईबासा में उपायुक्त बदलने की आन्दोलन सड़कों पर तो सरायकेला खरसावां जिले में प्रशासन एवं सरकार अपना मिडिया उतारकर जनता को स्वयं का अधिकांश मनगढ़ंत खबरें परोस कर गुमराह करने में आगे है लोगों को .अधिकारी जनता से दुर, मिडिया से दुर , तिजोरी भरने तथा भ्रष्ट नेताओं को लाभ पहुंचा ने मस्त है . सच तो यह है कि उस पशुपालन से भी बड़े घोटाले है अमित खरे के इस जिले मे आज .सिंहभूम व सरायकेला खरसावां मे जनमानस की तकलीफ़ व लुटेरे अधिकारियो की जमात देख साफ अंदाजा लगाया जा सकता स्थिति कितनी भयावह है .

अमित खरे को मिली इस नई जिम्मेदारी से पहले वे प्रधानमंत्री के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं . उन्होंने 12 अक्टूबर 2021 से प्रधानमंत्री कार्यालय में काम शुरू किया था और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े मामलों को देख रहे थे. खरे ने न केवल केंद्र सरकार बल्कि झारखंड सरकार में भी कई अहम पदों पर काम किया है.

अमित खरे का नाम शिक्षा क्षेत्र में भी बेहद अहम माना जाता है. उन्हें वर्ष 2018 में भारत सरकार का सूचना एवं प्रसारण सचिव बनाया गया था. इसके बाद उन्होंने स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता सचिव और उच्च शिक्षा सचिव के रूप में भी काम किया.

सबसे बड़ी बात यह है कि खरे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को तैयार करने और लागू करने वाली मुख्य टीम का हिस्सा रहे. इस नीति को आज भारत के शिक्षा क्षेत्र में एक ऐतिहासिक सुधार माना जाता ह

झारखंड में रहते हुए खरे ने कई सुधार लागू किए. वे राज्य में विकास आयुक्त और अपर मुख्य सचिव, वित्त-सह-योजना के पद पर भी रहे. उनके कार्यकाल में बजट-पूर्व परामर्श, निष्पादन बजट, लैंगिक बजट, क्षेत्रीय बजट, वित्तीय समावेशन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण डीबीटी और विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन जैसे कई सुधार किए गए.

इसके अलावा, वे मानव संसाधन विकास सचिव और रांची विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं.

दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक औरआईआई एम अहमदाबाद सेबिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने वाले खरे का प्रशासनिक करियर बेहद शानदार रहा है।

जमीन दिलाने के नाम पर करोड़ों हड़पने वाला समीम शेख जमशेदपुर से गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

जमशेदपुर, मानगो के आजादनगर थाना क्षेत्र में जमीन और फ्लैट देने के नाम पर लोगों से करोड़ों रुपये हड़पने के मामले में जमशेदपुर पुलिस ने नसीम शेख को गिरफ्तार किया. आरोपी नसीम ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर कई लोगों से फर्जी वादों के जरिए करीब एक करोड़ रुपये वसूलने की बात स्वीकार की है. पुलिस ने नसीम को जेल भेज दिया है. इस मामले में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश जारी है.

मानगो की आयशा परवीन नामक महिला ने अर्बन लेडर बिल्डर के मालिक नसीम शेख और उसके अन्य सहयोगियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी. आयशा परवीन ने बताया कि उन्होंने जमीन और फ्लैट दिलाने के लिए 28 लाख 70 हजार रुपये दिए, लेकिन नसीम ने पैसों का गबन कर दिया और धमकी भी दी. जांच में यह भी पता चला कि नसीम ने देश के विभिन्न लोगों से इसी तरह के फर्जी वादों के जरिए लगभग एक करोड़ रुपये वसूल किए थे और अब वह देश से भागने की योजना बना रहा था.

पटमदा पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में गठित विशेष पुलिस दल ने शनिवार को नसीम शेख को उसके गिरफ्तार किया. गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने उसके पास से यस बैंक का वेंचर वीज़ा इन्फिनिट बिजनेस कार्ड, इंडस्ट्रियल बैंक का टाइटेनियम डेबिट कार्ड, बैंक ऑफ इंडिया का प्लैटिनम रुपे डेबिट कार्ड, एमएनएसी का परवेज अख्तर के नाम से रसीद, टाटा मोटर्स का टेंपरी कार्ड और मोटरोला का एंड्रॉयड फोन बरामद किया. पूछताछ में नसीम ने अपना अपराध स्वीकार किया और आयशा परवीन से लिए गए 28 लाख 70 हजार रुपये की बात भी मानी. गिरफ्तारी के बाद उसे मेडिकल जांच कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया.

पटमदा पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में गठित विशेष पुलिस दल ने शनिवार को नसीम शेख को उसके गिरफ्तार किया. गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने उसके पास से यस बैंक का वेंचर वीज़ा इन्फिनिट बिजनेस कार्ड, इंडस्ट्रियल बैंक का टाइटेनियम डेबिट कार्ड, बैंक ऑफ इंडिया का प्लैटिनम रुपे डेबिट कार्ड, एमएनएसी का परवेज अख्तर के नाम से रसीद, टाटा मोटर्स का टेंपररी कार्ड और मोटरोला का एंड्रॉयड फोन बरामद किया. पूछताछ में नसीम ने अपना अपराध स्वीकार किया और आयशा परवीन से लिए गए 28 लाख 70 हजार रुपये की बात भी मानी. गिरफ्तारी के बाद उसे मेडिकल जांच कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया

उधर कहीं कहीं मूलवासी गरीब लोगों के जमीन का कागजात निर्माण कैसे हुआ यह उच्चस्तरीय जांच का विषय बना हुआ है ।

डॉ. लॉजिस्टिक्स : भारत की युवा शक्ति के साथ सप्लाई चेन के नए आयाम: डॉ. अंकुर शरण

भारत आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है। इस विकास यात्रा में शिपिंग, लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। हर उद्योग, हर सेवा और हर व्यापार की नींव एक मज़बूत और सटीक सप्लाई चेन पर टिकी होती है।

डॉ. लॉजिस्टिक्स का उद्देश्य केवल एक पेशेवर मंच बनाना नहीं है, बल्कि यह एक आंदोलन है — जहाँ संस्थान और उद्योग एक साथ जुड़कर युवाओं के लिए नए अवसर तैयार करें। आज की GenZ पीढ़ी के पास तकनीक, जानकारी और संसाधनों की कोई कमी नहीं है, बस ज़रूरत है सही दिशा और प्रेरणा की।

डॉ. लॉजिस्टिक्स की प्रमुख पहलें :

इंडस्ट्री–इंस्टीट्यूट ब्रिज प्रोग्राम

कॉलेज और यूनिवर्सिटी में लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन के प्रैक्टिकल मॉडल्स पर कार्यशालाएँ।

ऑन–ग्राउंड ट्रेनिंग, ताकि छात्र केवल किताबों तक सीमित न रहें।

मेंटॉरशिप नेटवर्क

अनुभवी लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल्स और छात्रों के बीच सीधा संवाद।

"जीवन के अनुभव" साझा कर युवाओं को वास्तविक चुनौतियों से परिचित कराना।

इनोवेशन लैब्स

छात्र अपने विचार और समाधान प्रस्तुत करें।

इंडस्ट्री विशेषज्ञ उन्हें व्यवहारिक स्वरूप दें और स्टार्टअप जैसी पहल को बढ़ावा मिले।

युवा नेतृत्व कार्यक्रम

सप्लाई चेन और लॉजिस्टिक्स से जुड़े केस स्टडी और वास्तविक समस्याओं पर प्रतियोगिताएँ।

विजेताओं को इंडस्ट्री प्रोजेक्ट्स में शामिल होने का अवसर।

CSR और सामाजिक पहल से जुड़ाव

पर्यावरण, सड़क सुरक्षा और टिकाऊ परिवहन पर युवाओं की भागीदारी।

सामाजिक दायित्व निभाते हुए प्रोफेशनल योगदान।

युवा क्या कर सकते हैं ?

अपने कॉलेज/संस्थान में लॉजिस्टिक्स क्लब बनाकर नेटवर्किंग और ज्ञान साझा करें।

छोटे-छोटे इंटर्नशिप प्रोजेक्ट्स से शुरुआत कर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें।

डिजिटल सप्लाई चेन टूल्स (AI, ब्लॉकचेन, डेटा एनालिटिक्स) सीखकर खुद को भविष्य के लिए तैयार करें।

मेंटॉर्स और उद्योग विशेषज्ञों से सक्रिय जुड़ाव बनाएँ।

मिलेनियम पीढ़ी की जिम्मेदारी

आज की मिलेनियम पीढ़ी को चाहिए कि वे अपने अनुभव और ज्ञान को अगली पीढ़ी से साझा करें। यही साझा अनुभव भारत को सप्लाई चेन महाशक्ति बनाने की दिशा में बड़ा कदम साबित होगा।

डॉ. लॉजिस्टिक्स आंदोलन से जुड़ें

भारत के तेजी से बढ़ते सप्लाई चेन और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए डॉ. लॉजिस्टिक्स एक सशक्त पहल है। इसका उद्देश्य है उद्योग और संस्थानों को जोड़कर युवाओं को व्यावहारिक अनुभव दिलाना और उन्हें वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करना।

डॉ. लॉजिस्टिक्स की ओर से हर वीकेंड कॉर्पोरेट/इंडस्ट्रियल मेंटरशिप सेशन आयोजित किए जाते हैं, जहाँ अनुभवी पेशेवर अपने अनुभव और केस स्टडीज़ साझा करते हैं। यह कार्यक्रम युवाओं को न सिर्फ रोजगार योग्य बनाता है बल्कि उन्हें नवाचार और नेतृत्व की ओर भी प्रेरित करता है।

यदि आपके पास कोई केस स्टडी, लेख या अनुभव है, तो आप इसे साझा कर इस आंदोलन का हिस्सा बन सकते हैं। यह पहल केवल रोजगार तक सीमित नहीं, बल्कि भारत को सप्लाई चेन महाशक्ति बनाने की दिशा में सामूहिक प्रयास है।

डॉ. लॉजिस्टिक्स का यही प्रयास है –

"युवा सपनों को अवसर से जोड़ना और भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक मंच पर सशक्त बनाना।"

drlogistics.ankur@gmail.com

टाटानगर रेलवे स्टेशन की उन 17 नाबालिग लड़कियां अब रेल-पुलिस अभिरक्षा में

अगर धर्मान्तरण मामला निकला तो सड़क पर उतरेगा विश्व हिन्दू परिषद्

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, टाटानगर रेलवे स्टेशन से शुक्रवार देर रात रेस्क्यू की गई 17 नाबालिग लड़कियों को टाटानगर जीआरपी ने शनिवार को अभिरक्षा में लेकर करनडीह स्थित सेंटर भेजा। पुलिस ने बताया कि लड़कियों के परिजनों को सूचना दी जा रही है और पुष्टि के बाद उन्हें घर भेजा जाएगा। जबकि, इन लड़कियों को ले जा रहे लोगों को छोड़ दिया गया है।

विश्व हिंदू परिषद के प्रचार प्रसार विभाग के प्रदीप सिंह ने बताया कि देर रात बजरंग दल कार्यकर्ता को स्टेशन पर संदिग्ध स्थिति में कुल 20 आदिवासी बच्चे एक शख्स के साथ दिखे। सूचना मिलने पर विहिप सिंहभूम विभाग मंत्री अरुण सिंह और उनकी टीम मौके पर पहुंचे। पूछताछ में पता चला कि बच्चों के पास कोई पहचान पत्र नहीं था और उनके साथ परिवार का कोई सदस्य भी नहीं था।

विहिप का आरोप है कि एक व्यक्ति खुद को फादर बता रहा था, जो एक महिला सिस्टर के साथ इन बच्चों को करनडीह लेकर जा रहा था। फादर ने रेलवे अधिकारियों को बताया कि बच्चों को दो दिन की ट्रेनिंग पर ले जाया जा रहा है। वहीं, मौके पर कुछ फादर और राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी हस्तक्षेप किया।

रेलवे प्रशासन ने तत्काल बच्चियों को करनडीह सेंटर भेजने की व्यवस्था की और जांच का आश्वासन दिया। विहिप नेता अरुण सिंह ने चेतावनी दी कि अगर जांच में धर्मांतरण जैसी गतिविधि पाई गई तो संगठन सड़क पर उतरकर आंदोलन करेगा और संदिग्ध व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

अभी राज्य मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं होगा : मनमोहन सामल

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य मंत्रिमंडल को लेकर चर्चा लंबे समय से चल रही थी। कुछ विवादास्पद मंत्रियों को हटाने के साथ-साथ कुछ नए चेहरों को मंत्रिमंडल में शामिल करने की भी चर्चा थी। हालाँकि, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल ने इस चर्चा पर विराम लगा दिया है। उन्होंने कहा है कि अभी राज्य मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं होगा।आज संबलपुर दौरे पर आए मनमोहन सामल ने मंत्रिमंडल फेरबदल को लेकर अहम जानकारी दी। मनमोहन ने बताया कि निगम और बोर्ड की योजना पर काम चल रहा है। संबलपुर ज़िला अध्यक्ष का चुनाव जल्द ही होगा। हालाँकि, राज्य मंत्रिमंडल में फेरबदल अभी नहीं होगा।मोहन सरकार को डेढ़ साल पूरे हो गए हैं, लेकिन मंत्रिमंडल में अभी भी छह मंत्री पद खाली हैं। कुछ मंत्रियों को पदभार तो जल्दी मिल गया है, लेकिन मंत्रिमंडल में फेरबदल नहीं हुआ है। इसलिए मंत्रिमंडल में फेरबदल और कुछ नए चेहरों को शामिल करने की चर्चा थी। हालाँकि, प्रदेश अध्यक्ष ने सीधे तौर पर कहा है कि परवान चढ़ने से पहले राज्य में कोई मंत्रिमंडल नहीं बनेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023